RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

गौतम बुद्ध

बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

मई-2022 | वर्ष - 14 | अंक : 04 | मूल्य : 5/-

संत कबीर दास

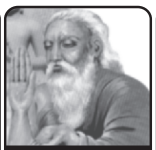
संत रविदास जी

घासीदास

बिरसामुण्डा

पेरियार रामास्वामी

छत्रपति शाहूजी महाराज

सन्त गाडगे

महात्मा ज्योतिबा राव फुले

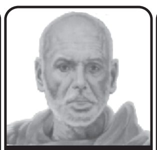
नारायण गुरु

सावित्री बाई फुले

बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल :
पुष्पेन्द्र गौतम, मल्हौसी, औरेया, उ.प्र. मो.: 9456207206
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य :
दिलीप कुमार कोसले, मो. : 09424168170
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001, मो. : 09887512360, 0144-3201516
चिरंजीलाल बैरवा (व्यावस्थापक) मेहरा आदर्श विद्या मन्दिर, भीम नगर कालोनी, राज भट्टा, दिल्ली रोड, अलवर, जिला-अलवर, मो.-09829855349
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरु नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020•IFSC CODE-SBIN0001784

प्रतिनिधित्व पूर्ण समाज ही न्यायपूर्ण समाज है

भारत पाकिस्तान का क्रिकेट गेम होता है और अगर पाकिस्तान जीत जाता है तो भारत के मुसलमान पटाखे फोड़ कर खुशी मनाते हैं या नहीं मनाते हैं ये बात तो शेड्युल्ड कास्ट, शेड्युल्ड ट्राईब्स, ओबीसी की जो बस्ती है उधर जाकर ब्राह्मण बताते हैं कि फलाने मुसलमानों की बस्ती में पटाखे फोड़कर खुशी मनाया है और उनका स्वागत किया है। वो लोग सुनते हैं मगर जाँच करने के लिए नहीं जाते हैं कि पटाखे फोड़े भी या नहीं फोड़े हैं। क्योंकि वो लोग नासमझ हैं। उनको दलील और तर्क करना नहीं आता है। उनको ये भी समझ में नहीं आता कि इसमें बदमाशी भी हो सकती है। वो ये सोचते हैं कि ये तो ब्राह्मण हैं ये तो धार्मिक आदमी हैं। धार्मिक आदमी बदमाशी क्यों करेगा ? इसलिये इसके बारे में गंभीरता से सोचना चाहिये।

अगर इन सारे सवालों का जवाब ये देते हो कि इस्लाम , मसावाद, और इतिहाद का धर्म है तो आप लोग गंभीर नहीं हो।

ब्राह्मण हमारे एससी, एसटी, ओबीसी के एरिया में आकर कहता है कि मुसलमान विदेशी है। इसके बारे में मुसलमानों की खबरदारी लेनी चाहिये। मगर मुसलमान कहते हैं कि हुमायूं, बाबर, अकबर, औरंगजेब हमारा पुरखा है। ऐसा कहकर खुद ही उनके नजर में सिद्ध करते हैं कि हाँ हम विदेशी हैं। इस तरह से उनकी धारणाएँ और ज्यादा मजबूत हो जाती है।

मा. मेश्राम ने कहा कि इस्लाम धर्म की लैंग्वेज अरबी में है। मगर कितने भारत के मुसलमान हैं जिनको अरबी आती है। एक सवाल है एक विचार, चिंतन के लिए। मुसलमानों में अरबी बोलने वालों को अंगुलियों पर गिन सकते हैं। बहुत से इलाके ऐसे हैं जहाँ अरबी तो छोड़ो, फारसी भी नहीं आती है। उर्दू भी नहीं आती है। उर्दू के बारे में भी भारत सरकार की रवैया बहुत डिफरेन्ट है। उसके बाद बहुत से एरिया है कि मुसलमानों को शुद्ध हिन्दी भी नहीं आती है। अगर आप गोरखपुर, आजमगढ़ जाओ तो वहां के मुसलमान भोजपुरी बोलते हैं। पटना में मगधी, लखनऊ में अवधी, केरला में मलयाली भाषा बोलते हैं। गुजरात में गुजराती बोलती है। मोहम्मद अली जिन्ना बैरिस्टर थे और गाँधीजी भी बैरिस्टर थे। दोनों बेहतरीन अंग्रेजी बोल सकते थे मगर जब भी आपस में मिलते थे गुजराती में ही बात करते थे। दोनो के दोनो बनिया थे।

इसलिये इसके बारे में वास्तव में सोचने वाली बात है कि आखिरकार ब्राह्मण, मुसलमानों के बारे में घृणा अभियान अभियान क्यों चलाता हैं ? शेड्युल्ड कास्ट को ब्राह्मण धर्म में अछूत कहा जाता है। अछूतों के विरोध में ब्राह्मणों ने घृणा अभियान चलाया। शेड्युल्ड कास्ट को ब्राह्मण धर्म में अछूत कहा जाता है। अछूतों के विरोध में ब्राह्मणों ने घृणा अभियान चलाया। शूद्रों के खिलाफ घृणा अभियान चलाया। ब्राह्मणों ने हजारों सालों तक एससी, एसटी, ओबीसी के खिलाफ घृणा अभियान चलाया। वही घृणा अभियान वो भारत के मुसलमानों के खिलाफ चला रहे हैं। क्या मुसलमान उस इतिहास को जानते हैं ? जिस एससी, एसटी, ओबीसी के खिलाफ ब्राह्मणों ने घृणा अभियान चलाया उस एससी, एसटी, ओबीसी के लोसों ने ब्राह्मण धर्म त्याग कर इस्लाम धर्म कबूल किया। जो मुसलमान विदेश से भारत में आये थे क्या उसी की संतान भारत का मुसलमान हैं। मेरा ऐसा मानना है कि 90ः से ज्यादा मुसलमान भारत में एससी, एसटी, ओबीसी से धर्म परिवर्तित मुसलमान हैं। यह बात भारत के मुसलमान को मालूम नहीं है। जो एससी, एसटी, ओबीसी से धर्मपरिवर्तन किया वो मुसलमान जानता है या नहीं जानता है मगर ब्राह्मण जानता है। यही मूलकारण है मुसलमानों के खिलाफ घृणा अभियान चलाने का। इसके बारे में जरूर सोचा जाना चाहिए कि क्या भारत में मुसलमान असुरक्षित है तो ये कारण नहीं ये परिणाम है।

इसलिये मुसलमानों को सोचना चाहिये कि इसका कारण क्या है ? अगर कोई मरीज डॉक्टर के पास जाता है तो डॉक्टर पहले इन्जेक्शन या दवा नहीं देता है। वो पहले डायग्नोसिस करता है। मरीज से दस सवाल पूछता है। फिर वो निर्धारित करता है कि मरीज को कौन सी बीमारी हुई उसके आधार पर दवा देता है। अगर कारण पता चल जाय तो मुसलमानों को उसका समाधान करने का काम करना चाहिये। अगर समाधान नहीं करोगे तो मैं ऐसा मानता हूँ कि समस्याओं का समाधान होने वाला नहीं है। जो फसाद होता है इसके बारे मे लोगों को क्या मालूम है ? एससी, एसटी, ओबीसी को हिन्दु के नाम पर मुसलमानों के खिलाफ फसाद के लिए इस्तेमाल किया जाता है। ऐसा इसलिये कहता हूँ कि ये फसाद मुसलमानों की समस्या नहीं है। फसाद में इस्तेमाल होने वाले लोगों की समस्या है। जिनका इस्तेमाल होता है उनकी समस्याओं का समाधान नहीं होता। लगभग सारे मुसलमान भारत को भारत नहीं कहते हैं, मेरा ऐसा मानना है कि उर्दू लिटरेचर में भारत नहीं है उसमें सभी हिन्दुस्तान शब्द है।

1925 से आरएसएस के लोग भारत को हिन्दुस्तान बनाने के काम पर लगे हुए हैं। वो आज तक कामयाब नहीं हुए। मगर मुसलमान पहले से भारत को हिन्दुस्तान बना दिया है। मेरे को समझ में नहीं आता है कि मुसलमान अपना काम कर रहे हैं या अपने दुश्मनों का काम कर रहे हैं। भारत का संविधान पढ़ो तो पहली ही लाईन में बाबासाहब ने लिखा है 'इण्डिया दैड इज द भारत।' इसको भारत के संविधान सभा ने पारित किया। इसका मतलब है कि डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर का अकेले की राय नहीं है। ये भारत के संविधान सभा की राय है। ये संविधानिक जनादेश है। संविधान में बाबासाहब ने, 395 आर्टिकल हैं केवल एक वाक्य जिसका उन्होंने अंग्रेजी में लिखा और उसके साथ साथ ट्रांसलेशन भी किया। क्योंकि वो जानते थे कि मेरे मरने के बाद में जब ब्राह्मण इसको ट्रांसलेशन करेगा तो इण्डिया का ट्रांसलेशन हिन्दुस्तान करेगा। जब तक संविधान बना रहेगा वो कामयाब नहीं होंगे। इसलिए संविधान को खत्म करने का उनका अभियान चल रहा है।

मुसलमान कहते हैं कि इस्लाम किसी किस्म का भेदभाव नहीं करता है। भारत के संविधान में जाति, वर्ण, लिंग, रंग, प्लेस ऑफ बर्थ, इसके आधार पर किसी भी नागरिक के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा मगर स्वर्ण मंदिर पर हमला हुआ। बोध गया में जो मैनेजमेन्ट कमेटी है वहाँ मेजॉरिटी ब्राह्मणों की है। चर्चों पर हमले हो रहे हैं। मुसलमानों के मस्जिदों पर हमले हो रहे हैं। इस

देश में जितने नॉन ब्राह्मीन रिलीजन हैं सभी लोगों पर हमले होते हैं केवल एक धर्म छोड़कर। संघ परिवार कहता है कि मुसलमानों का कांग्रेस तुष्टीकरण कर रही है। सच्चर कमीशन की रिपोर्ट कहती है कि मुसलमानों का सत्यानाश करने का काम अगर किसी ने किया तो वो कांग्रेस ने किया। सरकार को ये सारी बातें पहले ही मालूम थी क्योंकि सच्चर कमीशन में जो आंकड़े दिए हुए हैं ये सारे के सारे आंकड़े सच्चर कमीशन ने सरकार से ही सच्चर कमीशन को दिए हैं। माँगे हैं। सरकार ने ही सच्चर कमीशन को दिए हैं।

अगर सारे आंकड़े कांग्रेस को मालूम है कि मुसलमानों की हालत शेड्युल्ड कास्ट से बद्दतर है तो कांग्रेस ने यह कमीशन क्यों बनाया ? क्योंकि संघ परिवार ने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि कांग्रेस मुसलमानों का तुष्टीकरण करती है। इससे एससी, एसटी, ओबीसी का आदमी अपने को हिन्दू मानता है इसलिए उनका ध्रुवीकरण संघ परिवार और बीजेपी के अंदर हो गया। बहुत सारे हाईकास्ट के लोग इस बात को मानते हैं कि कांग्रेस मुसलमानों का तुष्टीकरण करती है। इस वजह से हाईकास्ट के लोग जो कांग्रेस के सपोर्टर थे वो कांग्रेस को छोड़कर बीजेपी का सपोर्टर हो गये हैं। इससे कांग्रेस के सामने समस्या है कि हम तो मुसलमानों का तुष्टीकरण नहीं करते हैं मगर हमारे ऊपर बीजेपी और संघ परिवार के लोग आरोप लगाते हैं कि कांग्रेस मुसलमानों का तुष्टीकरण करती है। इसका समाधान करने का काम कांग्रेस के हाथों में है। पहला यह कि पब्लिकली कांग्रेस यह कहें कि हम मुसलमानों का तुष्टीकरण नहीं करते हैं।

जो लोग नाराज होकर बीजेपी और संघ परिवार के साथ चले गये हैं उन लोगों को खुश करके कांग्रेस के साथ फिर जोड़ा जाय। लेकिन कांग्रेस ऐसा नहीं कर सकती क्योंकि मुसलमानों को मालूम हो जायेगा। इस वजह से मुसलमान नाराज हो जायेंगे। मंगर मुसलमानों को गुमराह करना है। उनको सचाई मालूम नहीं होनी चाहिए इसलिए ये रास्ता सही नहीं है। उन्होंने दूसरा रास्ता निकाला और सच्चर कमीशन बनाया। सारे देश भर में डिस्कश और डिवेट हुआ कि मुसलमानों की हालत शेड्युल्ड कास्ट से भी बद्दतर हो गई है। अब संघ परिवार और बीजेपी के लोंगो को कांग्रेस के ऊपर आरोप लगाना मुश्किल हो गया है कि कांग्रेस मुसलमानों की तुष्टीकरण करती है मगर सच्चर कमीशन कहता है कि नहीं करती है।

सच्चर कमीशन मुसलमानों की हालत को बयां करके, रिसर्च करके मुसलमानों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थिति सुधारने के लिए यह रिपोर्ट नहीं बनाया गया बल्कि हाईकास्ट के जो लोग कांग्रेस से टूट कर बीजेपी और संघ परिवार के साथ चले गये हैं उनको अपने साथ लाना चाहती है मकसद कांग्रेस दिल्ली में पूर्ण बहुमत से आना चाहती है। मुसलमानों का कल्याण करने के लिए यह सर्वे नहीं किया गया है।

1972 में इन्दिरा गाँधी ने 15 सूत्रीय कार्यक्रम बनाया था, उसको 35 साल हो गये। अलग से कमीशन बनाने की जरूरत नहीं है। अलग बनाने के पीछे का मकसद है कि जो नाराज लोग हैं उनको कॉंग्रेस जताना चाहती है कि हम मुसलमानों का तुष्टीकरण नहीं कर रहे हैं बल्कि हम तो मुसलमानों का सत्यानाश करने के काम पर लगे हुए हैं। मगर मुसलमानों को पता ही नहीं है।

इस बात के साथ मा. वामन मेश्राम ने अपनी बात समाप्त की।

साभार : बहुजनों का बहुजन भारत
20 मई 2007 वर्ष 6 अंक 19

कौटिल्य अर्थशास्त्र में दास प्रथा और सामाजिक न्याय

कौटिल्य का अर्थशास्त्र 300 ई. पू. की रचना है। यह काल घोर सामंतकाल था। जल, जमीन, जंगल, नदी, पहाड़, झरने सब कुछ सामंतों के हाथ में था। उस काल में जनता पर शासन करने वाले मुख्यतः 11 प्रकार के थे – पहली श्रेणी में ऋत्विक, आचार्य, मंत्री, पुरोहित, सेनापति, युवराज, राजमाता और पटरानी थे। ये भी अपनी सुख–सुविधा एवं ऐशोआराम के लिए 4000 रू. मासिक वेतन लेते थे। दूसरी श्रेणी में द्वारपाल, अंतः पुर रक्षक, आयुध अध्यक्ष, समाहर्ता और भंडार अध्यक्ष थे, जिनका वेतन 2000 रू. मासिक था। तीसरी श्रेणी में– युवराज के भाई, उन भाइयों की मालाएं, सूबेदार, मेजर, शहर कोतवाल, व्यापार और कृषि अध्यक्ष, मंत्रिपरिषद के 12 अध्यक्ष, पुलिस अधीक्षक और सीमा निरीक्षक थे, इनका वेतन 1000 पण मासिक था। चौथी श्रेणी में इंजीनियर, हाथी, घोड़े और रवों के अध्यक्ष तथा कंटक शोधन अधिकारी थे। इनका मासिक वेतन 666 पण था। पांचवीं श्रेणी में पैदल सेना का अध्यक्ष, अश्व सेना, रथ सेना, गज सेना के अध्यक्ष, लकड़ी तथा हाथियों के जंगल के अध्यक्ष थे। इनका वेतन मासिक 333 पण थे। छठी श्रेणी में रथ शिक्षक, गज शिक्षक, चिकित्सक, अश्वशिक्षक, मूर्गा सूअर पालने वालों के अध्यक्ष थे। इनका वेतन मासिक 166 पण था। सातवीं श्रेणी में सामुद्रिक, शकुन बताने वाले ज्योतिषी, स्तुतिवाचक (रामायण–पुराण कथा वाचक), पुरोहित, पुरोहित के नौकर और शराब ठेकेदार थे, इनका मासिक वेतन 83 पण था। आठवीं श्रेणी में चित्रकार, खिलाड़ी, राजा के यश लेखक आदि थे। इनका मासिक वेतन 42 पण था। नौवीं श्रेणी में नट, नर्तक और गायक थे। इनका मासिक वेतन 21 पण था। दसवीं श्रेणी में साधारण कारीगर और कुशल शिल्पकार थे। इनका मासिक वेतन 10 पण था। ग्यारवीं श्रेणी में बेगार करने वाले अकुशल श्रमिक, शिल्पकार, पौनी थे। इनका मासिक वेतन 5 पण था।

इस प्रकार वेतन के रूप में मंत्रिमंडल का खर्चा 8326 पण, अन्य विकास खर्चा 8000 पण तथा आयात खर्चा 6000 पण मिलाकर कुल 22 हजार 326 पण धनराशि की मासिक आवश्यकता होती थी। आमदनी अठन्नी खर्च रूपैया वाली कहावत चरितार्थ थी। उपरोक्त ग्यारह प्रकार के कर्मचारी, अधिकारी, मंत्रालय और सभासद ही नहीं 4%) ब्राह्मण, पुरोहित पुजारी वर्ष 5% क्षत्रीय टोटल निकम्मे थे। ये 7% कमकर (शूद्र और दासों) पर पूर्णतया निर्भर रहते थे यही नहीं इन्हें तरह–तरह से प्रताड़ित कर इनकी आंतड़ी की रोटी तक शान–शौकत के लिए छीन ली जाती थी। विरोधी का गला काट लिया जाता था।

कौटिल्य (अर्थशास्त्र पृ. 442) लिखता है कि जनपद की स्थापना ऐसी होनी चाहिए कि उसमें नीच वर्ण (शूद्र और दास) की आबादी अधिक होनी चाहिए। इसको स्पष्ट करते हुए लिखा (अर्थशास्त्र पृ. 77) है कि प्रत्येक जनपद में कम से कम सौ घर और अधिक से अधिक पांच सौ घर वाले ऐसे गांव बसाए जाएं जिनमें शूद्र तथा किसान अधिक हों। कौटिल्य ने स्पष्ट किया कि निकम्मों को खिलाने तथा राज्य के शासन–प्रशासन शान–शौकत के लिए शूद्र, दास आदि ही खून बहाकर धन पैदा करेंगे। वास्तव में शूद्र ही धरती के जीवन के आधार हैं। कौटिल्य को अच्छी तरह पता है कि शूद्र मर–मर कर कमाता है, और संभ्रांत वर्ग टांग पसारे खाता है। आज भी वैश्विकरण के युग में ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, कनाडा, अमेरिका आदि देश ऐसे ही स्थानों पर इन्हीं की जमीन छीनकर अपना विशाल साम्राज्य स्थापित करते हैं और आगे भी करते रहेंगे। शूद्र आज भी बेजुबान हैं।

कौटिल्य (अर्थशास्त्र–पृष्ठ 507) ने आगे लिखा है कि उस भूमि में चारों वर्णों के लोगों की स्थिति के संबंध में यह विचार कर लेना चाहिए कि सब तरह के सुख–दुख सहन करने वाले शूद्र, ग्वाले आदि नीची जाति के मनुष्यों वाली भूमि ही श्रेष्ठ होती है। क्योंकि खेती की अधिकता और निश्चित फलवती होने के कारण ऐसी भूमि सदा श्रेयस्कर होती है। शूद्र व्यक्ति खून–पसीना एक करता है इसलिए यह भूमि फलवती तो है किंतु किसके लिए? शूद्र की नीचता भी फलवती है तो सिर्फ उत्पादन के लिए वह उत्पादन जिसका वह अंश ही उन्हें प्राप्त हो पाता है जिनसे मात्र उनका जीवन निर्वाह ही हो पाता है। शायद भारत में कोई स्पार्टाकस पैदा नहीं हुआ।

श्रमिक वर्ग पसीना बहाते–बहाते जब आसक्त हो जाता है तो नाच–गाना आदि नाना प्रकार के मनोरंजन के द्वारा अपने को फिर अगले दिन खटने के लिए। तैयार करता है, किंतु इस पर भी कौटिल्य ने स्पष्ट शब्दों में रोक लगा दी है, संभ्रांत वर्ग जुआ, शराब, नंगा नाच को, क्लब की गणिका वृत्ति को उचित समझता है किंतु दास वर्ग जो मुख्य श्रमिक है, उत्पादन का को मनाही है। कौटिल्य (अर्थशास्त्र पृष्ठ 80/81) कहता है– गांवों में कोई भी नाट्यगृह, विहार तथा क्रीड़ाशालाएं नहीं होनी चाहिए। नट, नर्तक, गायक, वादक, भाण और कुशीलव आदि गांवों में अपना खेल दिखाकर कृषि आदि कार्यों में विघ्र उत्पन्न न करें, क्योंकि गांवों में नाट्यशालाएं आदि न होने से ग्रामवासी अपने–अपने कृषि कर्म में लगे रहते हैं, जिससे कि राजकोष की अभिवृद्धि होती है, और सारा देश धन–धान्य से समृद्ध होता है।

तब भी और आज भी मालिक दासों से सिर्फ रात–दिन खटाना जानते हैं, भले ही वह काम करते–करते मर जाएं पर क्षण भर सुस्ता न सकें। मध्य प्रदेश की एक ग्रामीण रिपोर्ट के अनुसार जमींदार बीमार बंधुआ (दास) से भी काम कराता है, उसका कहना है कि बैल बीमार हो जाए तो दवा कराई जाती है, और दास बीमार होता है तो उसे यूं ही उसके हाल पर छोड़ दिया जाता है, क्योंकि सामंतों के लिए बैल की कीमत दास से अधिक है, क्योंकि उस बैल की कीमत चार दास मिलते हैं।

कौटिल्य सामंत चाकर हैं। लिखते हैं–नाबालिक शूद्र अथवा जन्मना शूद्र को बेचने अथवा गिरवी रखने के लिए ले जाने वाले रिश्तेदार पर यदि संबद्ध व्यक्ति 'उदर दास' नहीं है तो उस पर 12 पण का जुर्माना लगाया जाना चाहिए। (पंतजलि 11–4.10 पर भाष्य) अर्थात नाबालिग शूद्र को बेचा जाता था, अर्थात दास क्रय–विक्रय का बाजार खूब गर्म था। शूद्र यदि वैश्य को बेचे तो जुर्माना 240 पण, क्षत्रीय को बेचे तो 500 पण और यदि ब्राह्मण को बेचे तो उस शूद्र पर 1000 पण का जुर्माना और मृत्युदंड। क्रेता और साक्षी भी इन्हीं दंडों के भागी होंगे। म्लेच्छ अपने बच्चों को बेच सकते हैं या गिरवी रख सकते हैं, किंतु किसी आर्य को दास नहीं बनाया जा सकता। फिर भी परिवार को कारावास से बचाने के लिए अथवा संकटग्रस्त आर्यों की रक्षा के लिए किसी आर्य (शूद्र) को गिरवी रखने की है। जो अपने आप को गिरवी रखता है, यदि वह भाग जाए तो पकड़े जाने पर वह सदा के लिए दास रहेगा। जो किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा गिरवी रखा गया है, यदि वह दो बार भागता है तो वह पकड़े जाने पर सदा के लिए दास हो जाएगा। गिरवीदार गिरवी रखे लोगों के भाग जाने, मर जाने अथवा असाध्य रोगों से ग्रस्त हो जाने पर उनके मूल्य का हकदार होता है। लेकिन यदि साहूकार गिरवी रखे लोगों से मुर्दा, कूड़ा–करकट, मूत्र अथवा जूठन उठवाए तो उसका पैसा नहीं मिलता। गिरवी रखी स्त्रियों के संबंध में भी यह बात लागू होती है। किंतु यदि नंगे व्यक्ति को स्नान करवाया जाए, पिटाई की जाए, उसका सतीत्व भंग किया जाए, उपचारिका का शील भंग किया जाए तो उसका मूल्य समाप्त हो जाने के कारण मुक्ति पाने की हकदार बन जाती है। (चानना–प्राचीन भारत में दास प्रथा) (पृ. 65 पर) कौटिल्य ने जो नौ प्रकार के दास 1. ध्वाहृतः ध्वजा के साथ लाया हुआ 2. उदर दास : पेट का दास 3. गृहजात–घर से उत्पन्न दास 4. क्रीतः खरीदा हुआ दास 5. लब्ध–पाया गया–प्राप्त दास 6. दाय आगत–विरासत में प्राप्त दास 7. दंडप्रगीत–न्यायिक निर्णय से प्राप्त दास 8. अहितकः गिरवी रखा दास 9. आत्म विक्रयी अपने आपको बेचने वाला दास बताया है। ये सबके सब शूद्र दास हैं। ब्राह्मण को बताया गया है कि वह कभी किसी भी दशा में दास नहीं हो सकते। क्योंकि ये साक्षात देव हैं।

मुक्ति चाहने वाला दास जो जुर्माना अदा नहीं कर सकता। वह सदा स्वामी की कृपा पर आश्रित रहता है तथा शारीरिक श्रम कर अपनी दासता से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। उस स्वामी को दंड मिलेगा जो आठ वर्ष से कम उम्र का दास रखता है, अथवा उसका किसी अन्य देश में बिक्री करता है। यदि दंड उस स्वामी के लिए भी है जो किसी गर्भिणी दासी को बिना उसका प्रसव कराए बेचता है। ऐसी दशा में क्रेता और साक्षी दोनों दंड के भागी होंगे। रिश्तेदार को दास की वस्तुओं को पाने का पूरा हक है। रिश्तेदार न होने पर वह मालिक की सम्पत्ति ही रहता है। किसी दासी और मालिक से पैदा हुआ पुत्र और वह दासी स्वतंत्र समझे जाएंगे किंतु उस दासी और उसके बेटे को दासता मिल सकती है। स्वामी से संपत्ति अथवा पत्नी और पिता का अधिकार कभी नहीं।

उस व्यक्ति के लिए 12 पणों का दंड है। जो पहले से स्वतंत्र किए जा चुके दास या दासी को उनकी इच्छा के विरूद्ध बिक्री या गिरवी के लिए लेता है। सबसे जो विचारणीय पक्ष है वह यह कि दास, दासी के द्वारा लगाया गया कोई भी अभियोग न्यायालय भी नहीं सुनेगा। न्यायालय सिर्फ मालिक की सुनता है, दास, दासी अथवा गुलाम की

नहीं। अपने कौमार्य को स्वयं भंग कराने वाली स्त्री राजा की दासी होती है। यदि कोई व्यक्ति आपदकाल में किसी स्त्री की रक्षा की हो या अकाल या दरिद्रता–भुखमरी के समय सहायता की हो तो वह व्यक्ति उस स्त्री को अपने घर रखकर भोग सकता है। किसी गरीब असहाय व्यक्ति के कहने पर वह अपनी स्त्री, पुत्री अथवा भगिनी की देखभाल नहीं कर सकता तो स्वामी उसको बलपूर्वक भोग सकता है। कोई स्त्री जंगल में बिछुड़ गई हो, खो गई हो डूब रही हो और उसे संभ्रांत व्यक्ति बचा लेता है तो उसे उस स्त्री को भोगने का संपूर्ण अधिकार है। साहूकार बंधक स्त्री का उपभोग कर सकता है, ध्यान रहे वह खोए नहीं।

स्वतंत्र व्यक्ति, देवताओं, ब्राह्मणों आदि की वस्तुओं (दास–दासियों) को छोड़कर अन्य सभी वस्तुओं (दास–दासियों) का राजा की अनुमति से उपभोग किया जा सकता है। ब्राह्मण के दोषी होने पर राजा तपे लोहे से दाग लगवा कर उसे निष्कासित कर देगा अथवा खानों में मजदूरों के साथ काम कर लगाकर काम करवाएगा। (चानना–वही, पृष्ठ–121)।

राजा के दास–राजा अपने राजभवन में सैकड़ों और कभी–कभी तो हजारों दास–दासियां रखते थे। सामंत, पुरोहित, सेनापति, सैनिक–इन राज दासियों का समान रूप से राजा से आंख बचाकर उपभोग करते थे। कौटिल्य ने विस्तृत रूप से इनका वर्णन किया है। 1. जो दासियां अंतःपुर की हैं केवल उन्हीं को अंतःपुर के साथ संबंध रखने दिया जाएगा। 2. जब राजा सोकर उठे तो दासियां धनुष बाण लिए राजा को घेरे रहें। 3. दासियों को स्नान कराना चाहिए, तेल मालिश करनी चाहिए, बिस्तर लगाने, कपड़े धोने और माला गूंधने का काम करना चाहिए। 4. भंडार गृह से टूटे और निकृष्ट अन्य दास, दासियों और रसोइये को देने चाहिए। दास (शूद्र) विष्टि होते हैं, इनसे बेगार ली और जूठन दी जा सकती है।

उस वेश्यादासी को जो अब भोग योग्य नहीं रही कोष्ठागार अथवा रसोई में काम देना चाहिए। वेश्यामाता, प्रशिक्षणस्थ वेश्या और रूप दासी पर प्रहार के लिए अर्थदंड और वेश्यादासियों को विविध कला की शिक्षा देने वाले को राजा की ओर से वृत्ति दी जाएगी। दासियां गुप्त सूचनाएं भी देती रहें। अनेक हलों से जोते जाने वाले, अपने खेतों पर (राजा) दासों, नौकरों और दंड प्रतिकर्ताओं से बुवाई का काम करवाएंगे। दासों और नौकरों को बुवाई में उनके भाग के अनुसार सवा पण प्रतिमास और साथ ही चावल का भात दिया जाना चाहिए।

निजी दास रखने वाले संभ्रांत लोगों, ब्राह्मण, कुदाक, ताल्लुकेदार, भूपति, जमींदार आदि को कौटिल्य ने सलाह दी है कि राजा को यह मालूम होना चाहिए कि किस ग्राम आदेश है कि जो व्यक्ति दास, बौद्ध भिक्षाओं तथा शूद्र संन्यासिनों को देख कर्मों और पितृ कर्मों में भोजन कराए उस पर सौ पण दण्ड दिया जाए (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–341) में कितने और किस वर्ण के दास हों तथा मालिक की बात न मानने, आज्ञा पालन न करने पर दास–दासी का तो दंड दिया ही जाएगा, उसके रिश्तेदारों को भी दंड दिया जाएगा। यदि पूर्ण मालिक नए मालिक से अपना दास अथवा दासी पुनः प्राप्त करना चाहे तो मात्र 5 पण देकर खरीद सकता है। कौटिल्य की ओर से यह आदेश है कि जो व्यक्ति दास, बौद्ध भिक्षाओं तथा शूद्र संन्यासिनों को देख कर्मों और पितृ कर्मों में भोजन कराए उस पर सौ पण दण्ड दिया जाए (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–341)

वैसे तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को छोड़ सभी म्लेच्छ हैं। किंतु कौटिल्य ने ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य को छोड़ सबको (शूद्र, दास–कमकर) को म्लेच्छ कहा है और यह भी आदेशित किया है कि म्लेच्छ भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए (अर्थशास्त्र–788)। इसको कौटिल्य (अर्थशास्त्र–पृ. 311) ने स्पष्ट किया है कि म्लेच्छ अपनी संतान को बेच अथवा गिरवी रख सकते हैं, इसमें कोई दोष नहीं हैं, किंतु आर्य किसी भी हालत में गुलाम नहीं जा सकती। यही नहीं अपने आपको बेच देने वाले आर्य पुरुष की संतान आर्य ही समझी जाएगी। अपनी कीमत चुकता कर वह अपनी आर्य श्रेणी में आ सकता है (अर्थशास्त्र–पृष्ठ 312–313)।

सभी आर्यों की तरह दुष्ट मानसिकता वाले कौटिल्य ने लिखा कि–हृदय की बात को छिपाकर बनावटी बातें करने वाला अनार्य (शूद्र) है। (अर्थशास्त्र–526/798) अनार्य (शूद्र) व्यक्ति की मित्रता से आर्य व्यक्ति की शत्रुता अच्छी है। (अर्थशास्त्र पृष्ठ–486–797) तथा अनार्य (दास–शूद्र) को अपने तिरस्कार का भय नहीं रहता (अर्थशास्त्र पृष्ठ संख्या 261–787)। कानून के संबंध को कहा है कि संप्रभु की आज्ञा की कानून है। अथवा विक्षिप्त तुलसी की सार्थक दो पंक्तियां हैं–'समरथ को नहिं दोष गुसाईं' कौटिल्य ने अपनी समरयापना के मद में यह आग उगला है। यदि वह किसी वेश्या का बेटा होता और किसी कोठे पर दलाली करता तो यह कदापि न लिखता और न अपनी संप्रभुता की लम्पटता को दर्शाया है। तभी यह कहता है कि – जिस अपराध के लिए शूद्र बध्य है वहीं उसी अपराध के लिए ब्राह्मण हो तो उसके वध के बारे में सोच भी नहीं जा सकता (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–50)। ब्राह्मण हो तो समस्त प्रकार के अपराध के लिए स्वर्ग से आया है, और उसको सजा नहीं मिलेगी वह ऊपर की ही अदालत से लिखवा कर लाया है। कहा भी है कि यदि पुरोहित (ब्राह्मण) से अभ्यंतर कोण जैसा महान अपराध हो जाए तो भी उसका वध नहीं करना चाहिए। क्योंकि ब्राह्मण वध का निषेध है (अर्थशास्त्र पृ. 603)। शूद्र द्वारा ब्राह्मणी स्त्रियों से उत्पन्न पुत्र चांडाल कहलाते हैं। इसमें ब्राह्मणी का रक्त शामिल है। अतः यदि वह गुप्तचर है तो उसका भी वध नहीं किया जाना चाहिए (अर्थशास्त्र पृ. 284) गुप्तचर है तो।

वेद में ब्राह्मण का वध पांच महापातकों में गिनाया गया है–**स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिपंश्च गुरोस्तल्पमावसन् ब्रह्महा चैते पतन्ति चत्वारः पञ्चमश्चाचरं स्तैरिति– छान्दोग्योपनिखार – 5/10/9** किंतु आदिपूर्व–महाभारत की कथा है–अपनी माता विनता को उसकी सौत सर्पों की माता कद्रू की दासता से मुक्त करने के लिए गरूड़ अमृत लाने चले, क्योंकि सर्पों ने अमृत पाने पर ही उनकी माता को मुक्त करने को कहा था–**श्रुत्वा तम ब्रुवन सर्पा आहारामृतोजसा, ततो दास्याद् विप्र मोक्षो भविता तव खेचर**–(महा–आदि 27/16)। चलते समय उन्होंने माता से वहां मिलने वाली कोई अपने खाने योग्य वस्तु पूछी। विनता ने वहा समुद्र के किनारे एकांत में स्थित निषादों की एक बस्ती बताई और कहा कि वहां हजारों निषाद रहते हैं। तुम उन्हें खाना (वही–28/2) परंतु ब्राह्मणों को मारने का कभी विचार भी मत करना (न च ते ब्राह्मण हन्तुं कार्या बुद्धिः कथ०चन महाभारत–आदि पर्व–पृष्ठ 28/3)।

गरूड़ के पूछने पर ब्राह्मणों का लक्षण बताती हुई विनता ने कहा–जो तुम्हारे कंठ में पहुंचकर आग के अंगारे की तरह जलने लगे तथा तुम्हारी जठराग्नि जिसे पचा न सके उसे तुम ब्राह्मण समझना–**यस्ते कण्ठमनुप्राप्तो निर्गीर्णं, बडिशं यथा, देहदंगारवत् पुत्र तं विद्याद् ब्राह्मणर्षभम्, जठरे न च जीर्येद् यस्तं जानीहि द्विजोत्तमम** (वही–महा–आदि–28–10–12)।

गरूड़ ने समुद्र के किनारे जाकर अपने मुंह को बड़े विस्तार के साथ फैला दिया। उसमें निषाद अपने आप समाने लगे। संयोग से एक ब्राह्मण भी अपनी निषाद कुलोत्पन्ना भार्या के साथ उनके कंठ में पहुंच गया। जिससे गरूड़ का कंठ जलने लगा। तस्य कण्ठमनुप्राप्तो ब्राह्मणः सह भार्यया, दहन–दीप्तः इवांगारः....(महा.आ.प. 29/1) घबराकर गरूड़ ने उसे शीघ्र पत्नी सहित बाहर चले जाने को कहा। बाहर आकर ब्राह्मण ने अनेक आशीष दिए।

कौटिल्य का नाम चाणक्य था किंतु उसकी कुटिलता के कारण उसे कौटिल्य कहा गया। नाम के अनुसार उसका मन काला था, तन उजला। उसने लिखा है कि जो–जो शूद्र (चांडाल) आर्य स्त्री (ब्राह्मणी, क्षत्राणी और वैश्या) को छुए उस पर सौ पण का जुर्माना (दंड) दिया जाए (अर्थशास्त्र पृष्ठ–341)। और यदि वही शूद्र (चांडाल) ब्राह्मणी, क्षत्राणी या वैश्या के साथ संभोग कर देता है तो उसे प्राण दंड दिया जाए (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–401)। मेरे मतानुसार समाज में आदिम साम्य–काल से ही दो वर्ग रहा है।

व्यक्ति वर्ग–एक	**व्यक्ति वर्ग–दो**
1. भेड़िया–सामंत, भूपति, जमींदार	1. कुशल धूर्त श्रमिक/राजाश्रयी श्रमिक
2. बुच्चर–हिंसक पशु, बैल, सूअर	2. श्रमिक/शिल्पकार/कृषि श्रमिक/परजीवी श्रमिक
3. जल्लाद–जांगल शिकारी मंत्री पुरोहित, दरबारी लेखक आदि	3. गौ (गाय), श्रमिक/घरेलू श्रमिक/गृहिणी/यौन श्रमिक / उदर श्रमिक आदि

कौटिल्य व्यक्ति वर्ग एक हैं। यही नहीं, मनु पराशर, याज्ञवल्क्य, तुलसी, वाल्मीकि, व्यास और सारे के सारे हिंदू (ब्राह्मणवादी) वर्ग एक के ही हैं। चाहे वह आर्थिक रूप से कितना ही विपन्न क्यों न हों। चाहे वह सर्प दिवस का सांप ही क्यों न हो, विष में कमी नहीं हो सकती। बढ़ता ही जाता है। वर्णी कौटिल्य लिखता है। शूद्र का एक ही धर्म है। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य की सेवा। खेती, पशुपालन, व्यापार, शिल्प, गायन, वादन, चारण–भाट आदि (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–10)।

जब कोई ब्राह्मण चातुर्वर्ण्य समानता, एकता और बंधुत्व की बात करता है तो मैं कहता हूं भेड़िया यही है, कौटिल्य जीने और मरने के साथ नहीं है, न साथ चाहता है, खान–पान, बेटी–रोटी का, उठने–बैठने का संबंध नहीं चाहता है, यहां तक कि मुर्दाघाट भी एक नहीं चाहता है, कौटिल्य ही नहीं समस्त ब्राह्मणवाद चाहता है कि श्मशान तक अलग–अलग हों। नगर के उत्तर या पूरब में श्मशान होना चाहिए और दक्षिण दिशा में शूद्रों (छोटी जाति) का शमशान होना चाहिए (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–93) और जो इस नियम का उल्लंघन करे उसे प्रथम साहस 100 पण का दंड देना चाहिए (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–93)।

ब्राह्मण को किसी अपराध में मृत्युदंड या ताड़न दंड न दिया जाए (अर्थशास्त्र पृ–397)। यदि पुरोहित से ऐसा कोई बड़ा अपराध हो जाए तो भी उसका वध नहीं करना चाहिए। क्योंकि ब्राह्मण का वध निषिद्ध है (अर्थशास्त्र पृ. 603)। अगर ब्राह्मण को दंड दिया भी जाए तो इतना कि सिपाही इनको इधर–उधर दौड़ा–फिरा दें (अर्थशास्त्र–पृष्ठ–378)। यही नहीं जो इन नियमों का उल्लंघन करे या कराए उसको उत्तम साहस का दंड दें (अर्थशास्त्र पृ. 378)।

शूद्र वर्ण का यशगान कौटिल्य इन शब्दों में करता है–जैसा कुल होता है, वैसा ही आचार होता है (अर्थशास्त्र–पृ. 795)। प्रबुद्ध शूद्रों के लिए जो पढ़–लिख कर अच्छा बने हुए हैं। कितना ही संस्कार क्यों न किया जाए, नीम आम नहीं बन सकता (अर्थशास्त्र पृ. 795)। शूद्रों के संबंध में कैसी सूक्ति गढ़ी है। देखिये–नीच पुरूषों को अपमानित होना ही भला लगा है (अर्थ. पृ. 784)। नीच पुरूष को कभी भी सुमति न देना चाहिए (अर्थ. पृ. 784)। नीच पुरूष की विद्याएं उसे पाप कर्म में प्रवृत्त करती हैं (अर्थ. पृ. 788)। नीच और उत्तम व्यक्ति में परस्पर विवाह संबंध नहीं हो सकता (अर्थ. पृ. 788)। शिल्पी लोग प्रायः ईमानदार नहीं होते। (अर्थशास्त्र–पृ. 309)।

अदालत को कौटिल्य का आदेश है, वकील और पेशकार तक को आदेश है कि वे कौटिल्यीय शासन पद्धति का पूर्णतया पालन करें। एक गवाही के लिए कौटिल्य लिखता है कि पानी से भरे घड़े के पास ब्राह्मण को शपथ के लिए ले जाया जाए। यदि ब्राह्मण गवाह हो तो 'सच बोलो' इतनी भर शपथ दिलाई जाए...यदि गवाह शूद्र हो तो उसके सम्मुख कहा जाए 'देखो यदि सच न बोलो तो जन्म–जन्मांतर का तुम्हारा सारा पुण्य राजा को प्राप्त हो, यदि तुमने झूठ बोला तो तुम्हें निश्चित ही दण्ड मिलेगा।' बाद में भी सुनकर देखकर मामले की जांच पड़ताल की जाएगी (अर्थशास्त्र पृ. 333)। यानी की 'सच बोलो' कह देने भर से ब्राह्मण सब कुछ सच–सच उगल देगा और शूद सब झूठ बोल देगा, इसलिए शूद्र को लोक–परलोक तथा पुनः जांच–पड़ताल की धमकी जाती है, डराया जाता है।

कौटिल्य को शूद्र सेना तो चाहिए पर विश्वास नहीं है, कौटिल्य यह भी मानता है कि ब्राह्मण सेना एकदम निकम्मी है, शत्रु ब्राह्मण सेना को नमस्कार कर सीमा पार कर सकती है। (अर्थशास्त्र पृ. 600) कौटिल्य कहता है–शूद्र सेना श्रेष्ठ है। यदि इनमें बहादुर हों–(अर्थ. पृष्ठ वही–600) कि शूद्र (आटविक) सेना के लिए अटवी बल की अपेक्षा अमित्र बल अधिक श्रेष्ठ होता है, क्योंकि यह आर्यगुणों से संपन्न एवं विश्वस्त पुरूषों के नेतृत्व में रहता है, किंतु अटवी बल के संबंध में ऐसा नहीं है, ये दोनों सेनाएं शत्रु बल को लूटने के लिए बड़ी उपयुक्त हैं, क्योंकि यदि उन्हें युद्ध में लगाया जाए या विपत्ति में सहायतार्थ नियुक्त किया जाए तो आस्तीन के सांप की तरह सदा ही उनसे भय बना रहता है (अर्थशास्त्र पृ. 599–600)। अतः स्पष्ट है कि कौटिल्य काल क्रूरतम सामंतीकाल है। जहां एक वर्ग सिर्फ कसाई है, और दूसरा सिर्फ बकरी। कौटिल्य विक्षिप्त और क्रूरतम ब्राह्मणवादी अर्थवादी समाजशास्त्री हैं।

साभार :
शूद्रो का प्राचीनतम इतिहास
पेज संख्या 231 से 239 तक
एस. के. पंजम

प्राकृतिक चिकित्सा

ग्रीष्म ऋतु पर विजय

ओ महान् दिनकर भास्कर, जीवन के मूल स्त्रोत, ऊर्जा के महान उद्‌गम, तुम्हें शत् शत् प्रणाम । तुम हमें हर दिन एवं हर वर्ष नित नवीन बनाते हो । संपूर्ण जगत के मानव, पशु एवं वनस्पति को हमेशा नया जीवन देते हो । शीतकाल में जब तुम्हारी किरणें मंद होकर हमारी पृथ्वी में आती है तब उसके प्रखर और तेज होकर हम तक पहुंचने की प्रतीक्षा करते हैं। क्या होगा, यदि तुम्हारी किरणें हमारी पृथ्वी पर नहीं पहुंचेगी? यहां की हर चीज मर जायेगी, वनस्पति एवं पशु मर जायेगें। पृथ्वी बंजर हो जायेगी। हम सभी अमावस की रात्रि जैसे गहन अंधकार में खो जायेंगे, आखिर तुम्हारी किरणें ही हमारी पृथ्वी की हर वस्तु को संभालती हैं, उन्हें जीवन देती है तथा उसका पालन – पोषण करके उनका विकास भी करती हैं, अतः हे प्राणदाता सूर्य तुम्हें फिर से शत् – शत् प्रणाम् ।

उपरोक्त अंश अफ्रीका महाद्वीप के एक देश के लोकप्रिय पुराण कथन के आधार पर उदघृत किया गया है । सूर्य जीवन का उद्‌गम है, बिना सूर्य प्रकाश के जीवन का अस्तित्व संभव नहीं है, अतः सूर्य की किरणों की लाभकारी शक्तियां महान हैं। सूर्य की किरणें संचार को गति देती हैं। लसिका प्रणाली को उनके कार्यों में मदद करती हैं। हृदय को बल देती है और मस्तिष्क को जागृत रखती है। सूर्य की किरणों के द्वारा हमारी त्वचा के भीतर विटामिन – डी तैयार होता है, जो कैल्शियम व फास्फोरस को रक्त संचार के उपयोग में लाने का काम करता है, जिससे हमारे रक्त का संगठन ठीक रहता है एवं शरीर की सारी अस्थियों को पोषण मिलता है । एक हल्का सूर्य प्रकाश स्नान स्नायविक कमजोरी, चिन्ता, उदासीनता, तनाव और कुंठा से ग्रसित व्यक्ति को स्वाभाविक स्वास्थ्य की ओर लौटा सकता है । सूर्य रश्मि में पाये जाने वाले पराबैंगनी किरणें श्वेत रक्तकण में वृद्धि करती है, जिसमें हमारी जीवनी शक्ति बढ़ती है तथा हम रोग संक्रमण से बचकर अच्छे स्वास्थ्य की ओर बढ़ते हैं। हर चीज की अति बुरी होती है। उसी तरह सूर्य किरणों का अतिसेवन भी बुरा है। सूर्य रश्मि के प्रयोग का समय देशकाल एवं व्यक्ति विशेष की आवश्यकता के अनुसार बदलते रहना चाहिये।

ग्रीष्म ऋतु में विशेष तौर पर हमें किरणों के समक्ष रहने से सावधानी बरतनी चाहिए, ताकि हम सूर्य अतिसेवन के शिकार न हों, इसलिए आवश्यक है, कि हमारे शरीर में सूर्य किरणों के द्वारा पैदा किये गये अतिसार के संतुलन को बनाये रखने के लिये पानी का संतुलन बनाये रखना चाहिए, क्योंकि अधिक समय तक ग्रीष्म ऋतु में धूप में रहने पर शरीर से पसीना काफी मात्रा में निकल जाने के कारण रक्त मे पानी की कमी की स्थिति पैदा हो जाती है, जो हमें कोई बीमारियों का शिकार बना देता है। रक्त में पानी हिए । यदि वह गहरा पीले रंग का है तो हमें पर्याप्त पानी की आवश्यकता है, लू लगना तथा लू लगने से पहले शरीर में झटके लगना रक्त में पर्याप्त पानी की कमी का प्रमाण है, साथ ही सोडियम की कमी पर पसीना निकलने की प्रक्रिया में रूकावट पैदा हो जाती है। यह पसीना निकलने की प्रक्रिया शरीर की गर्मी बढ़ जाने पर उसे अपने आप ठण्डा करने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया द्वारा शरीर का औसत तापमान स्थिर रहता है। पसीना निकलने की प्रक्रिया के द्वारा हम अपने चारों ओर ताप नियन्त्रक वातावरण पैदा करते है। पूरे शरीर के स्वास्थ्य को बनाये रखता है, क्योंकि जो प्रदूषण रहित द्रव हमारे रोमकूपों के द्वारा निकलता है इससे हमारा शरीर ओजोन की परतों को बिना चीरे हमारे शरीर को ठण्डा रखता है। प्यास लगना हमारे रक्त में पानी की कमी का सही प्रमाण नहीं माना जाता, इसलिये हमें अपने मूत्र के हर रंग पर ध्यान देना चाहिए । यदि वह गहरा पीले रंग का है तो हमें पर्याप्त पानी की आवश्यकता है, लू लगना तथा लू लगने से पहले शरीर में झटके लगना रक्त में पर्याप्त पानी की कमी का प्रमाण है, साथ ही सोडियम की कमी का भी।

इस तरह शरीर में द्रव की कमी व ताप की अधिकता से सिरदर्द, सिर का भारीपन, कमजोरी, उल्टी एवं उत्तेजना पैदा होती है। लू लगना, एक गंभीर स्थिति है, ऐसी हालत में लापरवाही करने पर मृत्यु भी हो सकती है। यदि लगातार धूप में रहने के कारण खूब पसीना निकलने पर हमें तीव्र प्यास लगती है तो वह रक्त में पानी की कमी के कारण ही होता है, इसके साथ ही भूख की कमी, सिरदर्द, चक्कर, जी मिचलाना एवं उल्टी की प्रक्रिया शुरू हो जाती है । लू लगने के दूसरे प्रधान लक्षणों में एक लक्षण है हृदय की धड़कन का बढ़ जाना ऐसी स्थिति में हमें तुरन्त छायादार स्थान पर जाकर विश्राम करना चाहिए, संभव हो तो कमरे के भीतर ठण्डे स्थान में जाकर लेट जाना चाहिए तथा निम्न विधि से शरीर के ताप को संतुलन मे लाने का यथाशीघ्र प्रयास करना चाहिए ।

ग्रीष्म ऋतु में घर से बाहर जाने पर हमेशा ठण्डे पानी की बोतल साथ रखना चाहिए, खासतौर पर धूप में बाहर जाने पर हमेशा ठण्डे पानी की बोतल साथ में रखना चाहिए, खासतौर पर धूप में रहकर बीच – बीच में हर आधे घण्टे में 100 से 120 ग्राम पानी पीते रहना चाहिए। हालांकि कई लोग घर से निकलते समय कई गिलास पानी एक साथ पी लेते हैं, लेकिन यह तरीका सही नहीं है, क्योंकि बिना आवश्यकता के पिया गया पानी शरीर पेशाब के जरिये यथा शीघ्र बाहर निकाल देता है, कई बार हमें तीव्र प्यास लगने पर पानी नहीं मिलने पर नारियल का पानी, फलों का रस, आम का पना, मट्ठा (छाछ) लिया जा सकता है। बहुत बार ऐसा होता है, कि हम धूप में काम करते हैं, या परिश्रम करते हैं और बाहर से हवा गर्म रहती है तब हमारी शर्ट अथवा अन्दर पहने हुए कपड़े पसीने से पूरी तरह गीले हो जाते हैं तथा बाहर की गर्मी गीले कपड़े को पार करके ठण्डा होकर हमारे शरीर में लगता है, जो हमें सुहाता है एवं शरीर के बढे हुए तापमान को कम करता है, ग्रीष्म ऋतु में हमें अधिक से अधिक ताजे फलों एवं कच्ची साग – सब्जियों का प्रयोग भोजन में करना चाहिए, जिससे हमारे रक्त में खनिज, नमक व पानी का संतुलन बना रहे।

ग्रीष्म ऋतु में कई लोग ठण्डे पेय पदार्थ के साथ अधिक नमक का प्रयोग करते हैं, लेकिन ऐसा करना इसलिये उचित नहीं है, कि रक्त में अधिक नमक की उपस्थिति पसीना पैदा करने के लिये प्यास को कम पैदा करती है, इसी तरह बीयर जैसे पदार्थ भी दूसरे मादक द्रव्यों की तरह लू लगने की प्रवृति को बढ़ावा देती है, क्योंकि इन पेय पदार्थे से भी रक्त मे पानी की कमी पैदा हो जाती है, इसलिये उनके बदले में सादा पानी, फलों का रस या कच्चे नारियल का पानी पिया जा सकता है।

ग्रीष्म ऋतु में जब सूर्य की किरणों का ताप सबसे अधिक होता है अर्थात 40 से 47 डिग्री सेल्सियस तक चला जाता है, ऐसे समय में यह आवश्यक है कि हम अपने त्वचा की रक्षा भी करें, ऐसा नहीं करने पर त्वचा ढीली झुर्रीदार हो सकती है तथा उसका रंग गोरा है तो सांवला व सांवला है तो काला हो सकता है, त्वचा को इस अधिक ताप वाले सूर्य किरणों के सीधे संपर्क में रखने पर त्वचा के अंदर की नमी कम हो जाती है, जिससे त्वचा का वह भाग मोटा हो जाता है। जो आगे चलकर स्पर्श ज्ञान अर्थात त्वचा की संवेदनशीलता को कम करता है। त्वचा में झुर्रियां आने लगती है, कई बार शरीर को बहुत अधिक सूर्य किरण में रखने पर कैंसर पैदा होने का खतरा भी हो सकता है, ग्रीष्म ऋतु में बहुत अधिक पसीना आने के कारण सारे शरीर में चकत्ते, पित्ती एवं घमौरियां पैदा हो जाती है। जिसके कारण पसीने का त्वचा के ऊपरी सतह में सुखकर रोमकूपों का बंद हो जाना है, जिससे पसीना सीधे त्वचा की ऊपरी सतह से रिसता है, इसलिये त्वचा ऊपरी सतह पर सारे शरीर में लाल चकते आ जाते हैं तथा उसकी वजह से चकतों के स्थान पर खुजली और जलन होने लगती है। समझना यह है कि ये बारीक चकते, घमौरियां तो नहीं है या फिर एक्जिमा की शुरूआत है। यदि हम ध्यान से देखें तो त्वचा में कई स्थान पर केवल छोटे लाल धब्बे व श्वेत ग्रन्थियां है, जिसके मुखों के ऊपर सूजन आ गयी है। उसी के ठीक आसपास जो घमौरियां पैदा हो जाती है। उनकी वजह से सुई चुभने जैसी चुभन होती है, ऐसी हालत में यथाशीघ्र सूखे स्थान पर जाकर खुली हवा के सपर्क में सारे शरीर को लाना चाहिए, जहाँ उमस न हो तथा खुली हवा तेज गति से बह रही हो, ढीले कपड़े हो खादी अथवा सूती कपड़े से बने हों, पहनने चाहिए। किसी भी तरह से रासायनिक पदार्थो से बने अर्थात् नायलोन, पालिएस्टर से बने कपड़े न हो व पहनने में चुस्त न हों । सारे शरीर में मिट्‌टी का लेप लगाकर 15 से 30 मिनट तक उसी हालत मे रखें। आवश्यकता हो तो लेप लगाने से पहले मिट्‌टी में थोड़ी बर्फ भी मिलायी जा सकती है, ताकि मिट्‌टी ठण्डी लगे, मिट्‌टी से सारे शरीर में ठण्डक पैदा हो, जो शरीर के आवश्यक गर्मी को खींच ले। लेप करने के बाद नीम पानी में स्नान करें। नीम पानी बनाने के लिये नीम पत्तों को पानी मे उबालकर घड़े में डालकर ठण्डा कर लेना अच्छा होगा। उसी के ठीक आसपास जो घमौरियां पैदा हो जाती है। उनकी वजह से सुई चुभने जैसी चुभन होती है, ऐसी हालत में यथाशीघ्र सूखे स्थान पर जाकर खुली हवा के सपर्क में सारे शरीर को लाना चाहिए, जहाँ उमस न हो तथा खुली हवा तेज गति से बह रही हो, ढीले कपड़े हो खादी अथवा सूती कपड़े से बने हों, पहनने चाहिए। किसी भी तरह से रासायनिक पदार्थो से बने अर्थात् नायलोन, पालिएस्टर से बने कपड़े न हो व पहनने में चुस्त न हों । सारे शरीर में मिट्‌टी का लेप लगाकर 15 से 30 मिनट तक उसी हालत मे रखें। आवश्यकता हो तो लेप लगाने से पहले मिट्‌टी में थोड़ी बर्फ भी मिलायी जा सकती है, ताकि मिट्‌टी ठण्डी लगे, मिट्‌टी से सारे शरीर में ठण्डक पैदा हो, जो शरीर के आवश्यक गर्मी को खींच ले। लेप करने के बाद नीम पानी में स्नान करें। नीम पानी बनाने के लिये नीम पत्तों को पानी मे उबालकर घड़े में डालकर ठण्डा कर लेना अच्छा होगा।

मोटापे से ग्रसित लोगों को अक्सर त्वचा मे जो धरियाँ पड़ जाती है, उन धारियों के गढ़ढे वाले भाग में पसीना इक्ट्ठा होकर सूखता है, जो सब तरह के चर्म रोंगों को जन्म देता है। जो मोटापे से ग्रसित होते

हैं उनके शरीर से अधिक पसीना निकलता है, क्योंकि उनके शरीर में अधिक गर्मी होती है। ग्रीष्म ऋतु में दोपहर 11 से शाम 4 बजे तक गर्मी बहुत ही प्रखर होती है। अतः इस समय अधिक ताप से बचाव करना आवश्यक है। सबसे अच्छा तरीका यह है कि अपने अंदर के वस्त्रों को पूरी तरह गीला करके बाहर धूप में जा सकते है, ऐसा करने से बाहर की गरम हवा पहने हुए गीले कपड़े को पार करके शरीर पर लगने पर सूखकर ठंडक पहुँचती है, जिससे शरीर का तापमान बढ़ नहीं पाता और लू से पूरी तरह से बचाव हो जाता है। यह एक तरह का वातानुकूलन (AIR CONDITIONING) की बाहरी प्रक्रिया है, लेकिन साथ ही हमें प्रकृति के द्वारा दिये गये आंतरिक वातानुकनूलन की प्रक्रिया का भी स्मरण रखना चाहिए । वह है सादे ठण्डे पेय पदार्थो का भरपूर सेवन, जिससे हमारे शरीर को वातानुकूलित रखने वाले यंत्र अर्थात त्वचा के रोमकूप पूरी मात्रा मे पसीना निकालकर शरीर के स्वाभविक तापमान को पूरी तरह से सामान्य अवस्था में बनाये रखते हैं। ग्रीष्म ऋतु में अच्छा यही होता है कि दोपहर 12 बजे से लेकर सायं 4 बजे तक सूर्य ताप में सीधे रहने तक सूर्य ताप में सीधे रहने से बचें । घर के अंदर रहने पर आँखों में ठण्डक पैदा करने के लिये खीरे को टुकड़ो में काटकर उसे आंख बंद करके पलकों के ऊपर रखना चाहिए या ठण्डी मिटटी की पट्टी अथवा गुलाब जल में भिगोया हुआ रूई का टुकड़ा भी बंद पलकों से ऊपर रखा जा सकता है। दोनों हथेलियों व पैर तलवों एवं सिर को ठण्डक पहुंचाने के लिये मेहन्दी को पीसकर उसका लेप लगाना बहुत ही अच्छा उपाय है।

वातानुकूलित यंत्र ;।प्ट ब्छक्ल्ज्प्व्छछ्ळद्ध पूरे घर अथवा हर कमरे में लगाना काफी महंगा कार्य है, अतः उसके बदले में खस की टट्टियाँ लगाकर कमरे को ठण्डा किया जा सकता है। ऐसा करने पर यह ध्यान रखना चाहिए कि खस की टट्टियाँ सूर्य की किरणों से सीधे पड़ने वाली खिड़कियों पर लगाये जायें, जिनमें पानी का डिछ़काव उन टट्टियों के सुखने से पहले करते रहना चाहिए। ऐसा करने पर न केवल आपका कमरा ठण्डा रहेगा वरन् आप पूरे समय तक जब तक आप कमरे में हैं खस की भीनी खुशबु से आनन्दित होते रहेंगे।

ग्रीष्मकाल के लिये प्रकृति ने पूरे शरीर में ठण्डक बनाये रखने के लिये बहुत सारे खाद्य पदार्थ पैदा किये हैं, ताकि हमारा शरीर सूर्य के अति ताप को ों कहें कि पूरे ग्रीष्म ऋतु में एक वक्त के भोजन में यदि आम की मात्रा 50 से 80ः हो तो हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य के लिये बहुत लाभकारी होगा। आम का प्रयोग करते समय यह सावधानी बरतनी चाहिए कि उसे प्रयोग के एक घण्टा पूर्व ठण्डे पानी में डुबा दिया जाये। यदि फल फ्रिज में रखा हुआ है तब आम को ठण्डे पानी में डुबाने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे उपयुक्त खाद्य पदार्थो में तरबूज, अन्नानास, बेल, संतरा, मौसंबी एवं चकोतरा मुख्य रूप से आते हैं। इसके अतिरिक्त खीरा, ककड़ी, सिंघाडा कमल फल तथा करौंदा भी ठण्डक पैदा करने वाले खाद्य पदार्थ हैं। नींबू पानी, गेहूँ के घास का रस, नीम पानी एवं खीरा भी शरीर के ताप को सामान्य अवस्था में बनाये रखने के लिये उत्तम है। अन्नों में इन दिनों ज्वार – बाजरा, बारली, गेहूँ एवं हाथ कुटे चावल भी अपेक्षाकृत ठण्डक पैदा करने वाले खाद्य पदार्थ हैं। ग्रीष्म ऋतु में इन खाद्य पदार्थो की चर्चा करने बाद आम फल की चर्चा किये बिना ग्रीष्म ऋतु की खाद्य तालिका करना चाहिए, या यों कहें कि पूरे ग्रीष्म ऋतु में एक वक्त के भोजन में यदि आम की मात्रा 50 से 80ः हो तो हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य के लिये बहुत लाभकारी होगा। आम का प्रयोग करते समय यह सावधानी बरतनी चाहिए कि उसे प्रयोग के एक घण्टा पूर्व ठण्डे पानी में डुबा दिया जाये। यदि फल फ्रिज में रखा हुआ है तब आम को ठण्डे पानी में डुबाने की आवश्यकता नहीं है।

उपरोक्त बातों का ध्यान रखने पर ग्रीष्म ऋतु की तपन भारी व त्रासदायी न होकर सुखद हो सकती है।

साभार–प्रकृति किरण 2003–04

डॉ. ए.एस. गुरु गोस्वामी
सदस्य छत्तीसगढ़, आयुर्वेदिक यूनानी एवं प्राकृतिक चिकित्सा बोर्ड रायपुर छत्तीसगढ़

परिनिर्वाण : 27 मई 1935

माता रामाबाई अम्बेडकर के परिनिर्वाण के मौके पर द्रविड़ भारत व भारतीय द्रविड़ विकास संघ, युवा, विद्यार्थी, महिला की ओर से भावभीनी श्रद्धासुमन ।

इस मौके पर प्रिय पाठकों के लिए भारत रत्न डा. बाबा साहब के कुछ उनके अनमोल वक्तव्य दे रहे हैं। ''माता रमाबाई बाबासाहब के संघर्ष मे जीवन भर साथ दिया'' ।

प्रथम पुण्य तिथि

श्री राजेन्द्र कुमार पुत्र स्व0 टी0 राम

जन्म 1941 मृत्यु 03.05.2021

पता – **R**–118, रेलवे लाइन बेनाझाबर, पुरानी कालोनी, कानपुर

पत्नी – श्रीमती केतकी देवी, पुत्र – संजय कुमार, अजय कुमार

पुत्रवधु – श्रीमती सुमन, श्रीमती सरिता

पुत्री – श्रीमती रेखा देवी, श्रीमती नीतू

जीजा – श्री महेश कुमार, श्री सुनील कुमार

समिति – श्री 108 स्वामी अछूतानन्द स्मारक समिति (रजि0) उ0 प्र0, कानपुर। (अध्यक्ष)

वैदिक (आर्य–ब्राह्मण) काल में स्त्री, वेश्यावृत्ति और शूद्र

गणपति कायस्थ नामक एक कवि हुए, इनका ग्रंथ 'माधवानल कामंदकला प्रबंध' इतना प्रसिद्ध हुआ कि अनेक भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। इसकी चर्चा गलियों से लेकर वेश्यालयों तक होते हुए राजमहलों तक पहुंची। उस काल का हर आशिक यह प्रबंध पढ़ता था और कथा श्रवण करता था। हर युवा स्त्री–षोडशी कामंदकला और हर युवा माधव बनना चाहता था। इस ग्रंथ का हिंदी अनुवाद मुस्लिम कवि आलम ने किया है। प्रबंध की कथा ये कि है उज्जेन के राजा विक्रम के राज्य में माधव नामक एक युवा ब्राह्मण अमरावती गया। अमरावती के राजा ने माधव के जाने पर वेश्याओं का नाच कराया। कामंदकाल एक ब्राह्मण वेश्या थी। राजा के दरबार में ऐसा नृत्य किया कि सभी मोहित हो गए। माधव उस वेश्या पर इतना मोहित हुआ कि राजा के द्वारा उसे दिया गया पान, उसने उस वेश्या को खिला दिया। राजा ने कुपित होकर तुरंत माधव को अमरावती छोड़ देने को कहा। पर माधव के आग्रह से उसे रात नगर में रूकने की आज्ञा मिल गई और उस रात माधव ने वेश्या कामंदकला के साथ यौन संसर्ग किया।

माधव अमरावती छोड़कर उज्जैन आया। वह व्याकुल रहता और दीवारों पर कामंकला का रूप सौंदर्य लिखता। राजा विक्रम को बात मालूम हुई। फिर ब्राह्मण की आज्ञा से विक्रम ने अमरावती पर आक्रमण किया। करोड़ों की धन–जन की हानि हुई और उस कामी ब्राह्मण को कामंदकला प्राप्त हुई। तात्पर्य ये कि वेद काल हो, या उससे पूर्व आर्य बर्बर काल रहा हो या आज, ब्राह्मण वर्ग ब्रह्मचारी, जगतगुरू, पुरोहित और साधू–मंहत का सिर्फ ढोंग ही करता है, सबसे अधिक कामाचारी और कामविक्षिप्त यही होता रहा है। जयशंकर प्रसाद ने स्पष्ट लिखा है कि पहला जल प्रलय ब्राह्मण की भोग लिप्सा और अत्याचार के कारण हुआ था।

स्वच्छंद यौनाचर की शुरूआत साम्यवाद काल में हुई किंतु वेश्यावृत्ति की शुरूआत सामंत काल में हुई। यहां स्वर्ग की अप्सराएं थीं जो उर्वशी, मेनका, रंभा आदि सैकड़ों वेश्याएं थीं। ये ऐसी वेश्याएं थीं, जिनके साथ सुपर भगवान देवगण और ऋषिगण संभोग करते थे। इनमें ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, इंद्र आदि सभी शामिल थे। ब्रह्मा ने अपनी ही बेटी सरस्वती के साथ बलात्कार किया था। विष्णु ने अपने छोटे भाई की पत्नी के साथ संसर्ग किया था और भगवान कहे जाने वाले राम ने अपनी बहन सीता से संसर्ग ही नहीं किया था बल्कि पत्नी भी बना लिया था और भी हजारों उद्धरण हैं।

उत्तम कुल महि उपनऊ मयण तणउ अवतार,
वली विचछण पणि घणा, भरिया धनभंडार।
आवइ आवासि आपणइ पणि लुइंता केश,
पुण्य हुईतु पामिई, वेश्या केरू वेश।।2।।

वेश्या कामंदकला कहती है कि पूर्व काल में बड़ा ही पुण्य करने से ही वेश्या का जन्म होता है, जिसमें हजारों कुलवान, रूपवान और धनवान पुरूष कदमों पर नाक रगड़ते हुए आते हैं। मैं बड़ी ही सौभाग्यवती हूं। गणिका के यहां कौन आता, ब्राह्मण या चांडाल, क्या फर्क पड़ता है? धन कहां से लाया यह भी कोई फर्क नहीं पड़ता। वेश्या के लिए सभी एक ग्राहक हैं।

एक कहई मह एकनी खाथी सोविन कोड़ी,
देस गयउ थइ दरसणी, रोम न दीधुं तोड़ि।।3।।

गणिका कहती है–ऐ सुनो, एक श्रेष्ठी का एक करोड़ का सोना मैं अकेली खा गई। आखिर अकिंचन होकर वह अपने देश लौट गया, पर जाते समय मैंने एक रोम तोड़कर नहीं दिया।

इस प्रबंध में ब्राह्मणों की यौन संस्कृति को वेदों, पुराणों तथा अन्य ग्रंथों से उद्धरण के द्वारा दर्शाया गया है। ब्राह्मणों की स्त्रियां क्यों वेश्यावृत्ति या परपुरूष समागम करती थीं, कामंदकला कहती है–

नीशत भणवा नीसरइ, न्हानी मूक धरि नारि।
जोव्वण जाइ जुरंता, तेह तणउ संसारि।।

अर्थात अधिकांश ब्राह्मण अपनी जवान बेटियों, बहनों तथा पत्नियों को घर पर अकेली छोड़ कर विद्याध्ययन या भिक्षाटन के लिए चले जाते हैं। वे राह तकते–तकते थक जाती हैं, तो क्या करें? (एक ही रास्ता बचता है, परापुरूषमन)

तिथिवारि नक्षत्रानां, नित नव नवा विचार।
खट मासे खाटे चढ़इ, एह सूई एक वार।।

ब्राह्मण स्त्री के परपुरूषगमन का अगला कारण है कि ब्राह्मण, तिथि, वार और नक्षत्रों की गणना में ही अपनी बुद्धि डुबो देता है, वह उसी में रात–दिन लगा रहता है। खाट पर चढ़कर, छः महीने, साल भर एकाध बार ही अपनी–अपनी स्त्री के साथ संभोग कर पाता है।

पुढिउ थिउ निशि पाछली, उठी अलगु थाइ।
दर्भ माटी लइ सामटी, नीसत नदीइ जाइ।।

अर्थात ब्राह्मण की दिनचर्या ही स्त्री के प्रतिकूल है। बारह बजे रात्रि तक मस्ती–मौज के प्रहर तक पोथी–पत्रा में, पिंड पत्थर में पड़ा रहता है। और पत्नी के सो जाने पर तोंद पर हाथ फिराकर खर्राटे भरता है और पहर रात रहे भोर होने से पहले ही (पत्नी के मद मस्ती के समय–साढ़े तीन से छः बजे सुबह का समय) वह उठकर अलग हो जाता है और इसके बाद उसका समय दर्भ और मिट्टी इकट्ठी करके स्नान संध्या के लिए नदी पर जाने में बीतता है।

कलक लता क्रूरा कुपण, कूडा कोइ प्रतीत।
क्षामोदरी किम खेलवइ, खिण खिण करता छीत।।

ब्राह्मण की पत्नियां, बहन–बेटियां क्यों शूद्रों से या परपुरूष ब्राह्मणेतर जातियों से संसर्ग करती हैं? क्योंकि वे ब्राह्मणों की शाम–सुबह की खिचखिच, छूत–छात बार–बार के स्नान–ध्यान, जल छिड़कना, पवित्रता– अपवित्रता, मुहं फुलाना, नाक–भौं सिकोड़ना, उनकी पत्नियों को, जवान स्त्रियों को पसंद नहीं आता है। जवान स्त्री को पवित्रता और बार–बार का छी–छी स्नान ध्यान नहीं चाहिए। उन्हें चाहिए भरपूर, चौबीस घंटे की मस्ती–आनंद कामंदकला कहती है–माधव बात–बात में बड़बड़ाने वाला, बीस बार नहाने वाला, लंबा शरीर–माथे पर टीका लगाने वाला, साग–पात खाने वाला, चटाई पर सोने वाला, क्रूर, कृपण और झूठी प्रीति करने वाला तथा क्षण–क्षण में छुआ–छूत का विचार करने वाला ब्राह्मण क्षामोदरी (कृशकटि) गदराई युवती को कैसे रख सकता है?

दिन भर में सूअर सौ बार नहाता है या फिर ब्राह्मण और लोगों से एक–एक पैसे व भिक्षान्न मांगते–मांगते वह इतना कंजूस हो जाता है कि भरपेट भोजन भी नहीं कर पाता है। इस प्रकार यह लोभी, फटेहाल, भिखारी, दमड़ीतोड़ ब्राह्मण पत्नी को क्या सुखी रख सकेगा खाक। परपुरूष यानी कि अनेक पुरूषों से जी भर कर आनंद।

स्नान करे नित सूवरां, रहइ निरंतर नेमि।
पेटि न खायइ पापीया, ते प्रज्जालइ प्रेमि।।

गणिकाएं कहती हैं–''प्रमदाइ पण पुरुष विण, रति न रहिणउं जाई अर्थात पुरूष के बिना रात नहीं बिताई जा सकती है और ब्राह्मण पुरूष पत्नी के साथ बिताने में पत्नी को संतुष्ट करने में सदा अक्षम होता है औ वेश्यावृत्ति में,–नहिं पडलु नहि परणवी, नहि कोइ जोवी न्याति, वेश्या विशनी नई विषइ, धरती आवई घात अर्थात परपुरूष संसर्ग में कोई बंधन नहीं, न जारि न धर्म, न कर्म, न भाषा न संस्कृति न परंपरा।''

कोकशास्त्र की उत्पत्ति ऋग्वेद से हुई है, क्योंकि ऋग्वेद का दशम मंडल पूरा कोकशास्त्र ही है। यमी अपने भाई से सहवास हेतु कहती है–

1. ऋग्वेद – 1–7–8

सुंदर गतिवाला महाबलवान वृषभ जिस प्रकार गायों के झुंड में घुस जाता है, उसी प्रकार सर्व कामनाएं पूरी करने वाले इंद्र देव स्त्रियों के समूह में घुसकर मनुष्यों पर अनुग्रह करते हैं।

2. ऋग्वेद – 5–66–4

अग्निदेव सब विवाहिता स्त्रियों का पति और समस्त कुमारिकाओं का जार है।

3. ऋग्वेद 5–71–1

एकांतवास करनेवाली स्त्रियां जिस प्रकार अपने असाधारण पति की सेवा करती हैं, उसी प्रकार होता की अंगुलियां पूजनीय अग्नि की सेवा करती हैं।

4. ऋग्वेद 6–83–2

अनेक पुरूष जिस प्रकार एक ही सुंदरी की कामना करते हैं, उसी प्रकार सोमरसपूर्ण यमश का सेवन करते हैं।

5. ऋग्वेद 5–92–4

नापित की तरह उषा अंधकार का सेवन करती है। नहीं–नहीं उषा सुंदरी के लिए इससे अधिक सुंदर रूपकविधान होना चाहिए, कुशल नटी की तरह वह अपने गाय के थनों जैसे भारक्त स्तनों को आवरणहीन करती है। यहां नटी का उरोज प्रदर्शन देह विक्रय करने वाली गणिका है, जो पेशेवर हैं। धंधा करती है।

6. ऋग्वेद 6–92–6

क्रमशः प्रकाशित होने वाली उषा संपत्ति देने वाले पुरूष को खुश करने वाली स्त्री (वेश्या) की तरह मुस्कराती है और खुश करती है।

7. ऋग्वेद 7–104–5

कोई स्वेच्छाचारी विषय लंपट पुरूष (वेश्या को) अपने धन का जिस प्रकार से अस्थान पर (वेश्यालय) पर दुरूपयोग करता है, वैसा बर्ताव तुम कभी मत करना।

8. ऋग्वेद 8–117–3

कामी युवा पुरूष जिस प्रकार अपना पूरा धन परस्त्री (वेश्या) को दे देता है, उसी प्रकार ऋभृण्व ने सौ भेड़ें काट कर दे दीं। यहां जीवहिंसा–वेश्यावृत्ति दोनों हैं।

9. ऋग्वेद 8–119–5

इसके बाद जुए में जीती हुई सूर्या ने आपका पति के रूप में वरण करके आप से सहचार किया। अर्थात जुए में स्त्री को दांव पर लगाया जाता था और उसे रखैल के रूप में रखा और भोगा जाता था।

10. ऋग्वेद 3–91–13

हे इंद्रदेव! श्रेष्ठ कक्षिवान को आपने प्रसन्न होकर रचया नामक युवती प्रदान की अर्थात सौगात रूपी रखैल।

11. ऋग्वेद 8–33–17

इंद्र ने उससे कहा कि स्त्री का मन रोके नहीं रूकता। स्त्रियों की बुद्धि अल्प होती है, फिर भी मनुष्य स्त्री के पीछे दौड़ता है। जैसे सूर्यदेव।

12. ऋग्वेद 7–76–3

इधर–उधर भटकती हुई उषा जार से मिलने वाली स्त्री के समान दिखती है। जार (प्रेमी) से छिपकर मिलने की कला हर युग में अमर हैं।

13. ऋग्वेद 1–167–4

जिस प्रकार मनचले युवक साधारण स्त्रियों के साथ मनमाना बरताव करते हैं, उसी प्रकार श्वेत आयुधों वाले मरूतगण जहां चाहें वहां संचार करते हैं। यह साधारण स्त्री वेश्या है, धंधे वाली गणिका है।

14. ऋग्वेद 10–40–29

घोषा नामक विदुषी स्त्री कहती है–जिस तरह विधवा स्त्री अपने देवर को अपने बिस्तर पर खींचती है और जिस प्रकार विवाहित स्त्री अपने प्रिय पुरूष को अपनी ओर खींचती है उसी प्रकार तुझे अपनी ओर कौन खींच रहा है? घोषा ब्रह्मचारिणी कुमारी है।

15. ऋग्वेद 1–28–2

भत्र द्वाविवा जघनाधिषवरण्या।
उलूखल सुतानाभवेद्विन्दु जल्गुलः।।

भाष्य हरिमोहन झा–जैसे कोई विवृत्त जघना अपनी दोनों जंघाओं को फैलाए हुए हो....और तुम उसमे.....।

16. ऋग्वेद 9–56–3

अभित्वा योषणों दश, जारं न कन्यानूषत, मृज्यसे सोम सताये अर्थात कामातुर स्त्री अपने जार को बुलाने के इसी प्रकार अंगुलियों से इशारा करती है।

17. ऋग्वेद 9–86–6

'मर्य इव युवतिभिः समर्षति, कलशे शतयाम्ना पथा' अर्थात कलश में अनेक धारों से रस फुहार छूट रहा है, जैसे युवतियों में।

18. ऋग्वेद 9–101–14

'सरज्जारो न योषणां, वरो न योनि मासदम' अर्थात यह रस उसी प्रकार कलश में जा रहा है, जैसे युवतियों में जार का।

19. ऋग्वेद 9–32–5

'अभिगावो अनूषत, योषा जारमिव प्रियम, अगन्नाजिं यथाहितम्' अर्थात हे सोम! मैं उसी प्रकार आपको ग्रहण करता हूं, जैसे स्त्री अपने जार को। हरमोहन झा (खट्टर काका) कहते हैं कि वेद में हजार बार जार की चर्चा आई है। ऐसा लगता है, उन दिनों पति से अधिक जार का ही बाजार गर्म था।

20. ऋग्वेद 9–112–4

'शेफ रोमण्वन्तौ भेदौ वारिन्मण्डूक इच्छतीन्द्रायेन्नो परिस्त्रव' अर्थात शेफ (कामदंड) रोमाच्छादित....विवर में प्रवेश करने हेतु इच्छुक है। हे सोम! तुम चू जाओ! अब इससे अश्लील क्या हो सकता है।

21. ऋग्वेद मंडल–9 सूक्त–1 श्लोक–34

अन्वस्य स्थुरं ददृश पुरस्तादनस्थ अरूरवरम्बमाणः।

अंगिरा ऋषि की कन्या शश्वती देवी एक युवा पुरूष (भासंग) के नग्न अंगों को देखकर उन्मत्त होकर कहती है–दोनों जंघाओं के मध्य में लटके हुए पुष्ट, लंबायमान..... देख–वाह! यह तो बहुत सुंदर भोग करने योग्य....धारण किए

हुए हो....।

22. ऋग्वेद–मंडल–10 सूक्त 85 श्लोक–37

यस्यां बीजं मनुष्या वपन्ति या न ऊरू उशती।

विश्रया ते यस्यामुशन्त प्रहराम शेफम्।।6।।

सूर्या नामक ब्रह्मचारिणी कहती है–मैंने अपनी दोनों जंघाओं को फैला दिया हैं, अब तू जननेंद्रिय पर चोट किए जा।

23. ऋग्वेद–मंडल–10 सूक्त–86 श्लोक–85

'वृषभो न तिग्म श्रृंगोन्तर्यूयेषु रोरूवत' इंद्र और इंद्राणी दोनों मदमस्त कामक्रीड़ा खुले में कर रहे हैं, ऋषि लोग बैठे देख रहे हैं और लिख रहे हैं, जैसे आज की अंग्रेजी फिल्मों में होता है–इंद्राणी ताल ठोंक कहती है–इंद्र जिस प्रकार टेढ़े सींगों वाला सांड़ मस्त होकर डकारता हुआ रमण करता है, उसी प्रकार तुम भी रमण करो। इसके बाद जो वेद में अश्लील संभोग का वर्णन है, कोकशास्त्र फेल। ऋग्वेद की अश्लीलता देख कोकापंडित भी मात खा गए तभी उन्होंने कोकशास्त्र को तुच्छांश कहा है।

24. ऋग्वेद–मंडल–1–सूक्त–126 श्लोक–6

उपोय मे परामृश मामेदभ्राणिमन्यथा।

सर्वाहमस्मि रोमशा गान्धारीणामवाविका।।7।।

युवती लोमशा का संभोग पढ़कर आप दंग रह जाएंगे। लोमशा यौवन के मद में मस्त होकर अपने सारे आवरणों को उतार फेंकती है और पूरी नग्न होकर राजा स्वनय से कहती–आप मेरे निकट आइए और बेधड़क पकड़िए, देखिए, भेड़ के रोओं की तरह कितने बड़े–बड़े..।

25. ऋग्वेद–मंडल–1 सूक्त–126 श्लोक–7

अगधिता परिगाधिता या कशीकेव जंगहे,

ददाति मह्यम् यादुरी याशूनां भोज्याशता।।8।।

अब इससे ज्यादा निर्लज्जता की बात किसी युवती के मुंह से निकल सकती है? नहीं। शूद्र स्त्री तो मारे लज्जा के गड़ जाती है अपने पति के सामने। पर यह ब्राह्मण कन्या कैसी निर्लज्जता दिखाती है और इसके बाद जो उद्दाम काम–क्रीड़ा होती है, वह कहने–सुनने योग्य नहीं। लोमशा इस प्रकार उन्हें आवेष्टित कर लेती है कि वह उसी समय गदगद होकर उसे रतिमल्लिका का खिताब दे देते हैं–यह युवती नेवले की तरह समूची देह से लिपट कर इस तरह रमण करती है कि रस से सराबोर कर देती है।

यहां 25 मंत्रों का तो मैंने केवल उद्धरण दिया है। वेद (ऋग्) में 500 स्थलों पर अश्लीलता, वेश्यावृत्ति, देहधंधा, गणिका और खुला कोकशास्त्र का वर्णन है। असल में वेद कामपीड़ितो, वेश्याओं, उनके भड़वों और असभ्यों द्वारा लिखित असभ्यों का असभ्य साहित्य है। वास्तव में इसीलिए शूद्र को वेद पढ़ने से मना किया गया कि यौन आनंद मूलतः वेश्यानंद शूद्र न ले पावें और इसका अच्छा खासा असर भी हुआ। वैदिकल काल में एक भी वेश्या शूद्र स्त्री नहीं हुई। न एक भी शूद्र भडवा हुआ। कारण साफ था, वेश्या होती तो मार खाती, शूद्र ब्राह्मण स्त्री के पास जाता तो ब्राह्मणी वेश्या धन लेकर भी तन न देती, अपवित्रता के लिए। हिंदू धर्म की ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वेश्या भी अपवित्र होती है, शूद्र मर्द के संसर्ग से। वेदकाल असभ्य (अविकसित) काल था। इसलिए उस काल में पशुवत यौन समागम भी था आर्य वर्ग में। आर्यो में खुला संभोग था, यही नहीं, बहन, बेटी, गुरूमाता आदि का ख्याल भी नहीं था, यह बर्बर काल की आर्य संस्कृति थी, जिसका जिक्र मैं पहले कर आया हूं, शूद्र पुरूष व स्त्रियां सदियों से उपेक्षित रहे हैं, इसलिए कभी देह धंधे में नहीं पड़े। असल में गरीब को इज्जत प्यारी होती है और अमीर को नारी। नौकर और गुलाम आनंद की अनुभूति नहीं कर सकता, न शूद्र वर्ग को भी अवसर मिलता तो पीछे न रहता।

सारा वेद, पुराण, रामायण, स्मृति आदि समस्त धर्म ग्रंथ ही अश्लीलता से भरा पड़ा है। संख्या में कुल एक लाख श्लोक हैं। किंतु दो–चार उद्धरण द्रष्टव्य है–

1. ऋग्वेद–मंडल–7 सूक्त–33 मंत्र–12

उर्वशी वेश्या के पेट से वशिष्ट का जन्म हुआ।

2. ऋग्वेद–मंडल–1 सूक्त–147 मंत्र–3

दीर्घतमा की गर्भिणी माता ने बृहस्पति से संभोग कर वर्ण संकर संतान को उत्पन्न किया।

3. ऋग्वेद–4 सूक्त–42 मंत्र–8

पुरूकुत्स की स्त्री ने सप्तर्षि की कृपा से। त्रसदस्यु नाम का पुत्र प्राप्त किया।

4. ऋग्वेद–मंडल–2 सूक्त 29 मंत्र–1

तमाम स्त्रियां गुप्त रूप से प्रसव करती थीं।

5. भाव प्रकाश–(खट्टर काका)–हरिमोहन सा

शिवाङ्गात प्रच्युतं रेतः पतितं धरणी तले

शिव जी की धातु पृथ्वी पर गिर गई, वही पारा है।

6. भाव प्रकाश–(खट्टर काका)–

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडंत्या रजसा प्लुतं

दुकुलम तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ

प्रसूतः तद्रजस्तस्माद् गंधकः समुदीरितः

अर्थात एक समय श्वेत द्वीप में क्रीड़ा करते–करते देवी जी स्खलित हो गईं, तब क्षीर समुद्र में स्नान किया। उसमें कपड़े से धुलकर जो रज गिरा वही गंधक है। अर्थात अंधविश्वास और अज्ञानता की हद पार हो गई है।

7. भाव प्रकाश–आयुर्वेद

चंदन–कपूर का लेप किए हुए रमणी मणि मेखलायुक्त जघन चक्र चलाती हुई, संपूर्ण शरीर में वन लता की तरह लिपट जाए तो प्रबल ताप को भी शांत कर देती है–'प्रबलतापनिपीड़ित मंगना।'

8. तं स्तनाम्यां सुपीनाम्यां पीवरोरूर्नितम्बिनी।

युवती गाढमालिंगेत् तेन शीतं प्रशाम्यति।

अर्थात मांसल जंघा और स्थूल नितंबवाली युवती अपने पीन स्तनों से गाढ़ा–लिंगन करे, तो सर्दी दूर हो जाएगी। एक ऋषि कहते हैं– 'प्रकामं तु निषेवेत मैथुनं शिशिरागमे' अर्थात जोड़े के समय में कौन हिसाब किताब, जितना मन उतनी बार रमण कीजिए और करते रहिए। एक ऋषि बोले–'नित्य बाला सेव्यमाना नित्यं बर्धयते बलम्' अर्थात जाड़ा क्या गर्मी क्या? प्रतिदिन बाला का सेवन करना चाहिए।

9. भावप्रकाश–आयुर्वेद ग्रंथ–

जाड़े की रात में, गर्मी के दिन में, बसंत ऋतु में रात या दिन किसी भी समय, वर्षा ऋतु में जभी मेघ का गर्जन हो, शरद ऋतु में जभी काम का वेग हो, रमण करना चाहिए। ऋतु चर्या का ठीक–ठीक पालन हो।

हरिमोहन झा ने एक ऐसी खीर की चर्चा की–भुक्त्वा हव्यति जीर्णोपि दशदारान ब्रजत्यपि अर्थात उस खीर को वृद्ध भी खाए तो दश प्रमदाओं का मान मर्दन कर सके। एक आश्चर्य ऐसा चूर्ण बनाते हैं कि–**"एतत्रसमेतं मधुनावलीढं रामाशतं सेचयतीत षंढः"** अर्थात नपुसंकता भी वह चूर्ण शहद के साथ चाट जाए तो कंदर्प बनकर सौ कामिनियों का दर्प चूर कर दे।

'निघंटु' में अभ्रक (अबरक) के बारे में एक ऋषि ने कहा है कि तारूण्याढ्यं रमयति शतं योषितां नित्यमेव अर्थात अभ्रक खाकर नित्य सौ स्त्रियों के साथ संभोग किया जा सकता है।

10. देवी भागवत 9–30

अन्नदानं च विप्रेभ्यः यः करोति च भारते

अन्नप्रमाणवर्षं च शिवलोके महीयते,

यो ददाति च विप्राय दिव्यां धेनुं पयस्विनीम्

तल्लोममानवर्ष च विष्णु लोके महीयते,

सालंकारां च भोग्यां च सवस्त्रा सुंदरीं प्रियाम्

यो ददाति च विप्राय चंद्रलोके महीयते।।

अर्थात जो ब्राह्मण को अन्नदान करेगा, वह जितने अन्न के दाने हैं, उतने वर्ष शिवलोक में रहेगा। जो खूब दूध देने वाली गाय ब्राह्मण को दान करेगा वह गौ की देह में जितने रोएं हैं, उतने वर्ष विष्णु लोक में रहेगा। जो भोग करने योग्य जवान सुंदर कन्या को वस्त्राभूषण समेत ब्राह्मण को दान करेगा, वह चंद्रलोक पहुंच जाएगा।

वाह! क्या खूब दानयान है, दान के यान पर बैठो और चंद्र लोक में वास करो, इसके लिए अपनी बहन, बेटी, पत्नी, ब्राह्मण के भोग के लिए दान करो। रूस, अमेरिका, चीन, जापान, फ्रांस की तकनीकि देखिए और भारत के जाहिल। दुष्ट ब्राह्मणों की दुष्टता देखिए। दानदाताओं की भी कमी नहीं। तमाम ब्राह्मण–अपनी बहन बेटियां देवदान करते हैं, जबकि उन्हे पता होता है कि उनकी दी हुई बहन, बेटी, स्त्री देवदासी (वेश्या) बनेगी और साधुओं, महंतों की रखैल बनेगी।

11. देवी भागवत

पतिव्रता चैकपतौ द्वितीये कुलटा भवेत्,

तृतीया धर्षिणी ज्ञेया चतुर्थे पुंश्चली तथा,

वेश्या च पंचमे षष्ठे पुंगी च सप्तमेष्टमे,

ततः उर्ध्वं महावेश्या....।।

अर्थात एक पति से संसर्ग होने पर पतिव्रता, दो से कुलटा, तीन से धर्षिणी, चार से पुंश्चली, पांच–छः से वेश्या, सात–आठ से पुंगी और उसके ऊपर से महावेश्या! 'उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्।'

12. ब्रह्म वैवर्त पुराण

स्वामिसेवा विहीना या वदति स्वामिने कटुम

मुखे तासां ददात्येवमुल्कां च यमकिंकराः

अर्थात जिंदगी भर पति और सास–ससुर की सेवा करने वाली पतिव्रता नारी यदि उसकी सेवा में जरा भी चूक हो गई तो वह सीधे नरक जाएगी और यमदूत उसके मुंह में ऊक लगा देंगे और यदि–

यद्यदिच्छति विप्रेन्द्रः तत्तत् कुर्यात् विलासिनी

सर्वभावेन चात्मानं अर्पयेन स्मित भाषिणी।

अर्थात कोई वेश्या मुस्काराकर मीठी वाणी बोलकर सर्वस्व समर्पित कर दे तो वह वेश्या सीधे स्वर्ग चली जाएगी। इसीलिए स्वर्ग में वेश्याओं और भड़वों की भीड़ है। पत्नीव्रताओं और पतिव्रताओं की स्वर्ग में कोई पूछ नहीं। इसलिए पुरोहित कहता भी है–धर्म–कर्म कीजिए बुढ़ऊ नहीं स्वर्ग नहीं मिलेगा।

13. महाभारत–आदिपर्व–

अद्यप्रभृति मर्यादा मया लोके प्रतिष्ठिता।

एक एव पतिर्नार्याः यावज्जीवं परायणम्।।14।।

महाभारत के इस आदिपर्व में दीर्घतमा कहती है कि इसके पहले तो प्राचीन आर्यकाल में एक पति की प्रथा थी ही नहीं। कि कोई पत्नी एक की बनकर सदा–सदा के लिए उसी के साथ रहे, चाहे वह जैसा भी हो।

पातिव्रत्यादि संकेतः बुद्धिमद दुर्बलैः कृतः

रूपवीर्यवता सार्धं स्त्री केलिमसहिष्णुभिः।।15।।

अर्थात बलहीन चालक पतियों ने रूपवीर्य वाले पुरूषों से अपनी स्त्रियों को बचाने के ईर्ष्यावश पातिव्रत्य धर्म की स्थापना की।

कृतः धर्मप्रपञ्चोयं परमुष्टयां न यतः पतेत्

कदाचित स्वकृशग्रीवा पत्नीपीनस्तनोथवा।।

अर्थात अपनी पतली गर्दन और पत्नी का पीन स्तन दूसरे की मुट्ठी में नहीं पड़े, इसी उद्देश्य से धर्म का इतना सारा प्रपंच रचा गया है। न स्त्री दुष्पति जारेण–जार कर्म से स्त्री दूषित नहीं होती है। रजसा शुद्धयते नारी अर्थात रजः स्त्राव हो जाने पर नारी शुद्ध हो जाती है।

असवर्णस्तु यो गर्भः स्त्रीणां योनौ निषेच्यते,

अशुद्धा सा भवेन्नारी यावद् गर्भ न मुडचति।

विमुक्ते तु ततः शल्ये रजश्चापि प्रदृश्यते,

तदा सा शुद्धयते नारी विमलं कांचन यथा।।17।।

अर्थात असवर्ण (शूद्र) से भी स्त्री को गर्भ रह जाए, तो उसका त्याग नहीं चाहिए। पुनः पुष्पवती (रजस्वला) होते ही वह निर्मल स्वर्ण की तरह शुद्ध हो जाती है। यहां शूद्रों पर कृपादृष्टि है। **शौचं सुवर्ण नारीणां वायुसूर्येन्दुरश्मिभिः18** अर्थात कामिनी और कांचन सूर्य चंद्रमा की किरणों और हवा से ही शुद्ध हो जाते हैं।

वृहदारण्यक का यह श्लोक देखिए आग स्त्री है, शिला जननेंद्रिय है, धुआं रोआं है, ज्वाला स्त्री का गुप्तांग है, चिनगारी आनंदकण है, आहुति वीर्य है...। आगे देखिए पुराणों की चाशनी। हरिमोहन झा कर खट्टर पुराण देखिए–ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि सहस्त्र वर्षों तक लगातार शिव–पार्वती का संभोग होता रहा, फिर भी शिव जी स्खलित नहीं हुए। तब विष्णु को चिंता हुई और उन्होंने ब्रह्मा को आदेश दिया–आप फौरन देवताओं के साथ जाइए और ऐसा उपाय कीजिए कि शिवजी की धातु भूमि पर स्खलित हो जाए, तब इंद्र, सूर्य, चंद्र, पवन आदि देवता वहां जाकर शिव जी की स्तुति करने लगे और शिव जी लगे रहे, स्तुति सुनकर शिव जी की रति समाधि भंग हुई और लज्जित होकर उठ गए। तभी वीर्य भूमि पर स्खलित हो गया। उसी से कार्तिकेय का जन्म हो गया। देवता भय से भाग गए। पार्वती को क्रोध आ गया और ब्राह्मणों को शाप दे दिया–अद्य प्रभृति ते देवा व्यर्थवीर्या भवन्तु वै। अर्थात आज देवताओं का वीर्य व्यर्थ हो जाए और तभी से ब्राह्मण देवता वीर्यहीन (नपुंसक) हो गए।

रतिभंगो दुःखमेकं द्वितीयं वीर्यपातनम्।

रतिभंगेन यद् दुःखम तत्सम् नास्ति च स्त्रियाः।।21।।

अर्थात यदि संभोग क्रिया के बीच में ही बाधा पड़ जाए अथवा पुरूष अन्यत्र स्खलित हो जाए तो स्त्री के लिए इससे बढ़कर कोई दूसरा दुख नहीं हो सकता। पुनः नाराज पार्वती को शिव जी मनाते हैं और दुबारा संभोग के लिए तैयार करते हैं। संभोग शुरू करते हैं और इस बार फिर जब स्खलित होने का समय आया तो विष्णु ब्राह्मण का रूप धर कर वहां प्रकट हो गए और बोले–मैं सात शाम का भूखा हूं पारण कराओ। यह सुन पार्वती खड़ी हो गईं और **पपान वीर्यं शय्यायां न योनौ प्रकृतेस्तदा।** इस बार पार्वती का वीर्य शय्या पर गिर पड़ा उससे गणेश का जन्म हुआ। ऐसे हैं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, पार्वती देवता–देवी आदि तथा ये है–इनकी उत्पत्ति संबंधी वैज्ञानिक चेतना। यह तो आप को पता ही है कि ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रीय, उदर से वैश्य तथा पैर से शूद्र पैदा हुए। यह वर्ग जो खुद ही महाअज्ञानी है, क्या किसी को दिशा देगा।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में आगे लिखा है कि, "उत्तम पुरूष वह है, जो बिना कहे ही नारी की इच्छा जान उसे खींच कर संभोग कर ले। मध्यम पुरूष वह है जो नारी के कहने पर संभोग करे, वह पुरूष नहीं नंपुसक है यह प्रसंग क्यों आया? एक बार मोहिनी ने यौवन मद से मत्त होकर ब्रह्मा से संभोग

की याचना की थी। वृद्ध ब्रह्मा अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए बोले कि मैं असमर्थ हूं, किसी युवा पुरूष को पकड़ो, बार–बार उकसाने पर भी ब्रह्मा तैयार नहीं हो सके तो मोहिनी ने धिक्कार कर कहा कि –

अये ब्रह्मन जगन्नाथ वेदकर्ता त्वमेव च,
स्वकन्यायां स्पृहासक्तः कथं हससि नर्तकीम्।
दासी तुल्यां विनीतां च दैवेन शरणागताम्,
यतो हससि गर्वेण तत्तो पूज्यो भवाचिरम्।।23।।

अर्थात हे ब्रह्मा...! अपनी कन्या के साथ तो विचार ही नहीं रहा, और हमारे वेश्या के सामने धर्मात्मा बन रहे हैं। जाइए, आप सम्मान के योग्य नहीं। अर्थात जब वेश्या ने स्वयं मुहं खोलकर संभोग की याचना की तब ब्रह्मा ने उसकी इच्छा पूरी नहीं की। यह उस नारी का अपमान हुआ ब्रह्मा के द्वारा, क्योंकि ब्रह्मवैवर्त में आगे लिखा है कि कोई स्त्री एकांत में स्वयं उपस्थित हो जाए उसे कभी नहीं छोड़ना चाहिए, जो कामार्त स्त्री का अपमान करता है, वह अपराधी है।

वेश्याएं कामी पुरुष को बहुत पसंद करती हैं ब्रह्मा सबसे कामी पुरूष थे। बल्कि ब्रह्मा, विष्णु और शंकर धरती के सबसे कामी पुरूष थे। इनका कार्य ही था, संभोग–संभोग–संभोग, जो मिल जाए, जहां मिल जाए, वहीं संभोग। इसलिए वेश्याएं इन तीनों को जहां देख लेती, बस कहतीं चलो, इनके मना करने पर बेटी के साथ किए संभोग का लांछन दे–दे धिक्कारने लगतीं देखिए।

त्वम् स्वयं वेदकर्ता च कन्यां सम्भोक्तुमिच्छसि
अस्माकं दुरतो दूरं गच्छ कामार्तमानस।

एक बार ब्रह्मा महादेव के साथ होम कर रहे थे, उसी समय पार्वती खूब बन संवर कर गई। ब्रह्मा देखकर मोहित हो गए और इतने कि वहीं बैठे ही बैठे स्खलित भी हो गए। ब्रह्मा ने लज्जित होकर वहीं निःसृत धातु को चुटकी से मसल दिया, उसी से बाल्यखिल्य मुनियों का जन्म हुआ। वहा! क्या कहने। अत्यधिक कामी पुरूष को यह शीघ्रपतन का रोग लग ही जाता है। यह नपुंसकता का लक्षण है, पर पूर्व के संभोगों से स्त्रियों की नजर में ब्रह्मा अभी जवान थे। किंतु...लिखने में शर्म आती है कि वेद, पुराण, स्मृति आदि हिंदू धर्म के समस्त ग्रंथों में ऐसे ही हजारों नहीं लाखों प्रसंग हैं, जहां खुला व्यभिचार है। असल में जिस वेदकाल की शुचिता की आज दुहाई दी जाती है, वह सब गलत है, वेदकाल में कहीं भी स्त्री पूजयनीय नहीं थी, बल्कि वेदकाल बर्बर काल था, इतिहास का सबसे घृणितम काल था, वेद काल में स्त्री (ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य) सिर्फ भोग–विकास की वस्तु थी। आर्यकाल (वैदिक काल) की असभ्यता ही उसकी सभ्य संस्कृति थी। शायद आज भी है।

हरिमोहन झा कहते हैं कि यह सब ब्राह्मणों की खुरपेंच हैं और यह सब जो धर्मशास्त्र हैं मूर्खों के लिए हैं, खुराफातियों के लिए हैं

मन्दबोधोपकारार्थं धर्मशास्त्रं विनिर्मितम्।
निज कल्याण मार्गं हि पश्यन्ति सुधियः स्वयं।।

अर्थात् जो मंद बुद्धि हैं, उन्हीं के लिए सारे धर्मशास्त्र बनाए गए हैं, जो बुद्धिमान हैं, वे स्वयं ही मार्ग बना लेते हैं। क्यों? क्योंकि 'पंडिताश्च प्रजाः सर्वे भयभीताः पराभवे' अर्थात प्रजा पीड़ित रहे, सभी भयभीत रहें, तभी तो पंडा को खीर–पुड़ी नसीब होगी, और यही तो है पंडा का फंडा।

न स्वर्गो नैव नरकं पुनर्जन्म न विद्यते।
नास्ति मृत्योः परं किंचित् मोक्षो देहविमोचनम्।।

शूद्र बंधुओं, विचारकों, बुद्धिजीवियों स्वर्ग नर्क कहीं नहीं है, पुनर्जन्म नहीं होता है, मृत्यु के बाद कुछ शेष नहीं रहता है, यह शरीर छूट जाना ही मोक्ष है। अंधविश्व के चक्कर में मत पड़ो, सचेतन बनो, पशु नहीं।

ततश्च जीवनोपायाः ब्राह्मणैरेव निर्मिताः
मृतानां प्रेतकार्याणि न क्रियन्ते क्वचित तथा

अर्थात ब्राह्मणों ने अपनी जीविका के लिए ये सब उपाय रचे हैं और कहीं इस तरह से श्राद्धकर्म नहीं होते हैं, क्योंकि और देशों में ब्राह्मण हैं ही नहीं, जो गाय की पूंछ पकड़कर वेतरणी पार करावें।

कुछ ब्राह्मण पुरोहित तो इतने दुष्ट और कामी थे कि लिखा नटी, संन्यासिनी, वेश्या, धोबिन, नाइन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन, मालिन–ये नौ कन्याएं गुप्त साधना के लिए अत्यधिक उपयुक्त हैं।

चाण्डाली तु स्वयं काशी प्रयागश्चर्मकारिणी
अयोध्या पुक्करती प्रोक्ता रजकी मथुरा मता।।

अर्थात चांडाली काशी धाम के समान है, चमाइन प्रयाग धाम है, कंजरी अयोध्या धाम है, और धोबिन मथुरा धाम के समान हैं। इनके साथ समागम करो। और मोक्ष प्राप्त करो। ये है इनका घृणितम रूप। कुल मिलाकर इनका वेदकाल का सब कुछ विक्षिप्त मानसिकता का प्रदर्शन है।

वैदिक काल में 3 प्रकार की वेश्याएं थीं–

1. दत्ताः अपने आपको स्वयं देवार्पित करने वाली स्त्रियां।

2. विक्रीता : मंदिरों को बेची जाने वाली स्त्रियां।

3. भृत्याः अपने परिवार के भरण–पोषण हेतु–वेतन लेकर मंदिरों में नृत्य और उसके साथ ही साथ देह विक्रय करने वाली स्त्रियां।

4. भक्ता : देवों के प्रति श्रद्धाभक्ति से प्रेरित होकर, स्वेच्छा से देवालयों में प्रवेश कर सर्वस्व समर्पण करने वाली स्त्रियां।

5. हीता : प्रलोभन में पड़ कर या किसी ब्राह्मण पुरोहित, या वेश्या के बहकावे में आकर मंदिरों को अर्पित करने वाली युवतियां।

6. अलंकृता : नृत्य–संगीता की शिक्षा से संपन्न और वस्त्रालंकारों से सज करके राजाओं/सामंतों द्वारा भोगी कन्याओं को देवालय को अर्पित युवतियां।

7. रूद्रगणिका या गोपिका : केवल धन के लोभ में देवालयों में गीतनृत्य और आनुषंगिक रूप से वेश्यावृत्ति करने वाली युवतियां।

8. अतिथि सत्कार में ब्राह्मणों को भेंट की गई एक रात की मेजबान युवतियां, जो बाद में उस महंत के साथ और फिर अनेक के साथ यौन संबंध बनाती।

9. पैशाची : किसी साधू–महात्मा या पुरोहित के द्वारा बेहोशी में, जबरन या नशा खिलाकर व्यभिचार की शिकार युवतियां जो वेश्या बन जाया करतीं।

10. राक्षसी : ये वेश्याएं वे होतीं जिन्हें मूल्य चुकता कर ब्राह्मण, पुरोहित, साधु या महात्मा गरीब माता–पिता, भाई, भाभी, मामा, ताऊ से खरीद लेते हैं।

11. विधवा : ब्राह्मण स्त्रियां जो जवानी में ही विधवा हो जाती थीं। उनके पास तीन रास्ते थे–एक वह पति के साथ चिता में जलकर मर जाए या घर में ही निखलंकार पशुवत जीवन व्यतीत करे या देवालयों में वेश्या बन जाए। तो अक्सर युवा ब्राह्मण, क्षत्रीय स्त्रियां वेश्या बन जाया करती थीं।

12. अवरूद्धा : यह एक परिवार के लिए नियत की गई दासी या रखैल होती थी। इसके साथ परिवार का ही कोई भी व्यक्ति संभोग करता था, अवरूद्धा पारिवारिक वेश्या होती थी। इसे सामंत, श्रेष्ठी आदि रखते थे।

13. भुजिन्या : यह वेश्या भी पारिवारिक ही होती थी। किंतु इस वेश्या के साथ परिवार का सिर्फ एक विशिष्ट व्यक्ति ही संभोग कर सकता था।

इन तेरह प्रकार की वेश्याओं में ग्यारह प्रकार के वेश्याएं सिर्फ ब्राह्मणी, क्षत्राणी या वैश्या ही हुआ करती थीं। दो प्रकारों राक्षसी और वैशाची शूद्र वह भी दस से बीस प्रतिशत हुआ करती थीं।

आर्य वैदिक काल में पंद्रह प्रकार के पुत्र थे। इसी से वैदिक काल की घृणितम व्यवस्था को समझा जा सकता है। स्त्रियों का कितना घिनौना रूप था, यह वेद कालीन 15 प्रकार के पुत्रों से पता चल जाता है। सिर्फ एक पुत्र औरस (जायज) पुत्र होता था। शेष 14 अवैध पुत्र होते थे।

1. क्षेत्रज या प्रणीत–पति की : सम्मति से किसी निकट संबंधी के समागम से पत्नी का पुत्र, पति की नपुसंकता की दशा में वंशावृद्धि हेतु।

2. परिक्रीत : आर्थिक या कामसुख हेतु पत्नी द्वारा परपुरूष से उत्पन्न पुत्र।

3. पौनर्भव : विधवा, परित्यक्ता या विवाह विच्छेदिता स्त्री द्वारा पुनर्विवाह के पश्चात दूसरे पति से उत्पन्न पुत्र।

4. कानीन : कौमार्यावस्था में अवैध पुत्र। इसका विवाह संभोग कर पिता बनने वाले अवैध पति से होता था, या मातामह का पुत्र मान लिया जाता था।

5. स्वैरिणीज : स्वैरिणीज (व्यभिचारिणी) पत्नी से उत्पन्न पुत्र।

6. दत्तक–निःसंतान : दंपत्ति द्वारा निकट संबंधी पुत्र लिया गया गोद।

7. कृत्रिम : निःसंतान दंपत्ति द्वारा किसी अन्य सगोत्री से दत्तक लिया हुआ पुत्र।

8. क्रीति : बालक के माता–पिता को धन देकर खरीदा हुआ पुत्र।

9. स्वयं उपगत या स्वयं दत्त : अज्ञात माता–पिता की संतान जो किसी के द्वारा पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया जाता था।

10. सहोढज : विवाह के समय गर्भवती स्त्री जिसके पुत्र को उसका पति उसे अपना नाम देकर स्वीकार कर ले वह सहोढज है।

11. हीन योनिधृत : शूद्र स्त्री से द्विज पुरूष द्वारा उत्पन्न पुत्र।

12. द्विजयोनिधृत : द्विज स्त्री से द्विज पुरूष द्वारा उत्पन्न पुत्र।

सेवा में,

नाम ....

पता ....

....

....

13. गूब्ज : गृहपति द्वारा दासी, संबंधी या आश्रिता द्वारा उत्पन्न पुत्र।

14. परित्यक्तः पालन–पोषण में असमर्थ या लोक लज्जा के भय से अपने ही पुत्र को त्याग देने वाले पुत्र।

दम्भी लोभी तथा क्रोधी कृपणः स्त्रैण एव च।
निन्दकश्याटुकाश्च पण्डितः सप्त लक्षणः।।

अर्थात वैदिक काल के द्विजों के सात लक्षण थे–दंभी, लोभी, क्रोधी, कंजूस, कामी, निंदा करने वाले और चाटुकार। सारे आर्य धर्मग्रंथों में ये ही सात लक्षण परिलक्षित होते हैं। शूद्र वर्ग इनसे बचें।

प्रमुख संदर्भ एवं टिप्पणियां

1. रामधारी सिंह दिनकर–संस्कृति के चार अध्याय।
दशरथ जातक–जातक रोमन/हिंदी अनुवाद
ललई सिंह–सच्ची रामायण
पेरियार ई.वी. रामासामी नायकर–सच्ची रामायण
2. गणपति कायस्थ–माधवानल कामंदकला
दमनलाल बसंतलाल देसाई–अप्सरा, पृष्ठ 690–91
3. वही, पृष्ठ–691–92
4. हरिमोहन झा–खट्टर काका, प्रकाशक–राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, 110002 पृष्ठ–232–33
5. वही, पृष्ठ 234
6. वही पृष्ठ 235
7. हरिमोहन झा–वही पृष्ठ–235
8. वही, पृष्ठ–236
9. हरिमोहन झझा–खट्टर काका, राजकमल प्रकाशन
10. देवी भागवत, अध्याय–9 श्लोक–30
11. वही–देवी भागवत
12. ब्रह्मवैवर्त पुराण–भाष्य–हरिमोहन झा
13. भविष्य पुराण –उत्तरपर्व–4–111
14. महाभारत–आदि पर्व
15. लोकायत दर्शन
16. हरिमोहन झा–खटटर काका, पृष्ठ–151
17. अति स्मृति–भाष्य–हरिमोहन झा
18. आपस्तंब स्मृति–भाष्य–हरिमोहन झा
19. वृहदारण्यक, अध्याय–6–2–13
20. ब्रह्मवैवर्त पुराण–भाष्य–हरिमोहन झा
21. ब्रह्मवैवर्त पुराण–भाष्य–हरिमोहन झा
22. ब्रह्मवैवर्त पुराण–भाष्य–वही, पृष्ठ 225–26
23. ब्रह्मवैवर्त पुराण–भाष्य, वही, पृष्ठ 226
24. वही–भाष्य–वही, पृष्ठ–226
25. ब्रह्मवैवर्त पुराण–भाष्य–वही पृष्ठ–227
26. हरिमोहन झा–धर्म विचार, वही, पृष्ठ–155
27. वही, पृष्ठ–163
28. गुप्त साधना तंत्र–वहीं, पृष्ठ–238
29. रूद्रयामल तंत्र–वही पृष्ठ–238
30. हरिमोहन झा–खट्टर काका, पृष्ठ–170

सन् 1962 में टाटा स्कूल ऑफ सोसल साइंसेस द्वारा डॉ. पुणेकर के निर्देशन में भारत में वेश्यावृत्ति पर एक अध्ययन किया गया। रिपोर्ट देखिए।

1. 32.9% वेश्याएं देवदासियां थीं।
2. 50% वेश्याएं मैसूर राज्य की थीं।
आधी में शेष अन्य भारत की
3. 79.43% वेश्याएं हिंदू–ब्राह्मण क्षत्रीय–वैश्य थीं।
11.81% वेश्याएं मुस्लिम थीं।
6.75% वेश्याएं ईसाई धर्म की थीं।
1.5% वेश्याएं शूद्र वर्ग की थीं।
1.6% वेश्याएं अन्य थीं।
4. गैरदेवदासी वेश्याओं में से 40.93% अविवाहित, 28. 27% विधवाएं, 17.30% घर से भगाई हुई स्त्रियां, 7.17% परित्यक्ता, 5.91% पति से पृथक्करण किए हुए तथा 0.42% विवाहित स्त्रियां थीं।

साभार :
शूद्रो का प्राचीनतम इतिहास
पेज संख्या 213 से 230 तक
एस. के. पंजम